15 सूरए अल हिज्र

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 1

आयत का अनुवाद: "अलिफ़ लाम रा ये किताब (ख़ुदा) और वाजेए व रौशन कुरान की (चन्द) आयते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कुरान को अल्लाह की एक रौशन किताब के रूप में प्रस्तुत करती है।**
- **हेतु (Reasoning): यदि कुरान एक रौशन किताब है, तो यह पूरी मानवता के लिए स्पष्ट और अपारदर्शी नहीं होनी चाहिए। लेकिन इसका साहित्यिक और भाषाई रूप कभी कभी अस्पष्ट होता है, और इसके अर्थों को समझने में मतभेद होते हैं।**
- **उदाहरण (Example): वेदों और उपनिषदों का उद्देश्य भी मानवता के कल्याण और आत्मज्ञान की ओर है, लेकिन वे स्पष्ट और गूढ़ संदेशों से भरे हुए हैं, जिनमें तर्क और मनन की आवश्यकता होती है। इसी तरह से, धर्मग्रंथों का उद्देश्य संज्ञान और मानसिक विकास है।**
- **निगमन (Conclusion): यदि कुरान को रौशन किताब माना जाता है, तो इसे मानवीय तर्क और समझ से परे नहीं होना चाहिए। इसे मानवता के सामान्य ज्ञान और तार्किक क्षमता के अनुसार होना चाहिए।**

आयत 2

आयत का अनुवाद: "(एक दिन वह भी आने वाला है कि) जो लोग काफ़िर हो बैठे हैं अक्सर दिल से चाहेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत काफिरों के भविष्य की स्थिति के बारे में भविष्यवाणी करती है।**
- **हेतु (Reasoning): यह भविष्यवाणी पूरी तरह से काल्पनिक है और तर्कसंगत प्रमाण के बिना दी गई है। भविष्यवाणी का कोई व्यावहारिक आधार नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भूतकाल में भविष्यवाणियाँ की गईं, लेकिन कोई भी भविष्यवाणी वास्तविकता के अनुरूप नहीं थी। इसलिए भविष्यवाणियाँ हमेशा तर्क और प्रमाण के खिलाफ होती हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि इसमें कोई प्रमाण या अनुभवजन्य आधार नहीं दिया गया है।**

आयत 3

आयत का अनुवाद: "काश (हम भी) मुसलमान होते (ऐ रसूल) उन्हें उनकी हालत पर रहने दो कि खा पी लें और (दुनिया के चन्द रोज़) चैन कर लें और उनकी तमन्नाएँ उन्हें खेल तमाशे में लगाए रहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत काफिरों की स्थिति को इस रूप में प्रस्तुत करती है कि वे अपनी इच्छाओं और खेलों में मग्न होंगे, और यह उनके भाग्य का हिस्सा होगा।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्कसंगत नहीं है कि काफिरों को केवल सांसारिक सुख भोगने की अनुमति दी जाए, जबकि उन्हें सही मार्ग पर लाने का कोई प्रयास न किया जाए।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जीवन का उद्देश्य केवल भोग नहीं है, बल्कि धर्म, कर्म, और आत्मज्ञान की दिशा में बढ़ना है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में काफिरों के प्रति कोई सकारात्मक संवाद या मार्गदर्शन नहीं दिया गया, और यह केवल दुष्प्रेरणा और कट्टरता का प्रचार करती है।**

आयत 4

आयत का अनुवाद: "अनक़रीब ही (इसका नतीजा) उन्हें मालूम हो जाएगा और हमने कभी कोई बस्ती तबाह नहीं की मगर ये कि उसकी तबाही के लिए (पहले ही से) समझी बूझी मियाद मुक़र्रर लिखी हुयी थी।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि हर बस्ती की तबाही पहले से निश्चित है।**
- **हेतु (Reasoning): यह अवधारणा व्याप्ति के सिद्धांत के खिलाफ है, क्योंकि किसी भी घटना की पूर्वनिर्धारितता का दावा प्रमाणित नहीं किया जा सकता। प्रकृति और मानवता में बदलाव संभव है, और घटनाओं के लिए पूर्वनिर्धारित कारणों का कोई प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, कोई भी घटना तात्त्विक कारणों से जुड़ी होती है, जो स्वतंत्र रूप से उत्पन्न होती है, न कि पूर्वनिर्धारित फैसलों के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भविष्यवाणी और पूर्वनिर्धारित भाग्य के सिद्धांत को बढ़ावा देती है, जो तर्क और स्वतंत्र इच्छा के खिलाफ है।**

आयत 5

आयत का अनुवाद: "कोई उम्मत अपने वक़्त से न आगे बढ़ सकती है न पीछे हट सकती है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि कोई भी समुदाय अपने नियत समय से न आगे बढ़ सकता है, न पीछे हट सकता है।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्कसंगत नहीं है कि एक समुदाय की गति केवल पूर्वनिर्धारित होती है। समाज और समय में परिवर्तन हमेशा सम्भव होता है, और यह तर्क के खिलाफ है कि कोई भी समाज अपने समय से बंधा हो।**
- **उदाहरण (Example): इतिहास में हमने देखा है कि कई समाजों ने सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक रूप से बदलाव किए हैं, जो समय के साथ आगे बढ़ने का प्रमाण हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत स्वतंत्रता, परिवर्तन, और समाज के विकास के सिद्धांत के खिलाफ है। इसके अनुसार कोई समाज अपने मार्ग को बदलने में सक्षम नहीं है, जो कि गलत है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
1	प्रमाण	यदि कुरान रौशन किताब है, तो इसे स्पष्ट और समझने योग्य होना चाहिए।
2	प्रमेय	भविष्यवाणी के आधार पर कोई प्रमाण नहीं है।
3	हेतु	काफिरों के प्रति मार्गदर्शन की कमी, केवल कट्टरता।
4	व्याप्ति	घटनाओं की पूर्वनिर्धारितता का दावा तर्कहीन है।
5	प्रमाण	समाज की गति केवल पूर्वनिर्धारित नहीं हो सकती।

निष्कर्ष: इन आयतों में तर्क और न्याय के सिद्धांतों का अभाव है। कुछ आयतों में पूर्वनिर्धारण और भविष्यवाणी का विचार प्रस्तुत किया गया है, जो तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं हैं। इन आयतों में मानवता और स्वतंत्रता के सिद्धांतों के खिलाफ विचार व्यक्त किए गए हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 6

आयत का अनुवाद: "ऐ रसूल कुफ़्फ़ारे मक्का तुमसे कहते हैं कि ऐ शख़्स (जिसको ये भरम है) कि उस पर 'वही' व किताब नाज़िल हुई है तो (अच्छा ख़ासा) सिड़ी है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): कुफ़्फ़ारे मक्का नबी से यह सवाल करते हैं कि अगर तुम सचमुच अपने दावे में सच्चे हो, तो क्यों फरिश्ते को हमारे सामने नहीं लाते।**
- **हेतु (Reasoning): यहाँ पर यह दवाब डाला जा रहा है कि यदि कुरान सच्चा है, तो उस पर कोई और ठोस प्रमाण (जैसे फरिश्तों का आगमन) होना चाहिए। यह तर्कपूर्ण नहीं है, क्योंकि जो चीज़ अनुभव या समझ से परे हो, उसे केवल वैज्ञानिक प्रमाणों द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता।**

- **उदाहरण (Example):** वैदिक दर्शन में, परमात्मा के अस्तित्व को केवल अनुभव के माध्यम से माना गया है, जो कि एक गहन आत्मानुभूति और विद्या है, न कि बाहरी रूप से प्रमाणित किया जा सकता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाणों की सीमाओं को नजरअंदाज करती है और केवल भौतिक या अनुभवजन्य प्रमाण की मांग करती है, जो कि तर्कसंगत नहीं है।

आयत 7

आयत का अनुवाद: "अगर तू अपने दावे में सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं ला खड़ा करता।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** कुफ़्फ़ारे मक्का नबी से फरिश्तों के सामने आने की मांग करते हैं।
- **हेतु (Reasoning):** यह दलील तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि यदि किसी व्यक्ति ने आध्यात्मिक या दैवी संदेश दिया हो, तो उसकी सत्यता को फरिश्तों के आगमन से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। नश्वर मनुष्य की समझ और विश्वास पर निर्भर करता है।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि विश्वास और श्रद्धा के माध्यम से सत्य को जान सकते हैं, न कि केवल बाहरी प्रमाणों से।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तर्क के आधार पर मान्य नहीं है, क्योंकि केवल बाहरी और भौतिक प्रमाणों से आध्यात्मिक सत्य को सिद्ध नहीं किया जा सकता।

आयत 8

आयत का अनुवाद: "(हालाँकि) हम फरिश्तों को खुल्लम खुल्ला (जिस अज़ाब के साथ) फैसले ही के लिए भेजा करते हैं और (अगर फरिश्ते नाज़िल हो जाए तो) फिर उनको (जान बचाने की) मोहलत भी न मिले।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** फरिश्तों को किसी निश्चित अज़ाब के साथ भेजा जाता है, और जब फरिश्ते आ जाते हैं, तो उन्हें मोहलत नहीं मिलती।

- **हेतु (Reasoning): यह व्याप्ति का उल्लंघन करता है, क्योंकि हर घटना का एक प्राकृतिक और तर्कसंगत कारण होता है। यहां यह दावा किया जा रहा है कि फरिश्तों का आगमन एक अपरिहार्य घटना है, जो तर्क और प्रमाण के विपरीत है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार, प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण और परिणाम होता है, जिसे तर्कसंगत रूप से समझा जा सकता है। यह केवल एक सार्वभौमिक और निरंतर सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत को चुनौती देती है, क्योंकि किसी भी घटना का कोई अप्राकृतिक कारण नहीं हो सकता।**

आयत 9

आयत का अनुवाद: "बेशक हम ही ने कुरान नाज़िल किया और हम ही तो उसके निगेहबान भी हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कुरान को अल्लाह द्वारा भेजा गया सत्य मानती है और इसके संरक्षण की जिम्मेदारी भी उसी पर डालती है।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्क आधारित है, लेकिन इसे भी तर्कसंगत रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। अगर कोई किताब या वाणी अल्लाह के द्वारा भेजी गई है, तो इसकी सत्यता को किसी बाहरी प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक ग्रंथों की तरह, जो भूतपूर्व विद्वानों और तात्त्विक विचारों के द्वारा संरक्षित किए गए हैं, इसी प्रकार कुरान का संरक्षण किसी तात्त्विक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं हो सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत सत्यता के आधार पर कोई तार्किक प्रमाण नहीं देती, क्योंकि यह केवल विश्वास पर आधारित है, जो तार्किक नहीं है।**

आयत 10

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) हमने तो तुमसे पहले भी अगली उम्मतों में (और भी बहुत से) रसूल भेजे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह बताती है कि अल्लाह ने पहले भी अन्य रसूलों को भेजा था।**
- **हेतु (Reasoning): यह तर्कसंगत है, लेकिन यह सिद्धांत उस समय के संदेशों को उस सभ्यता और समाज के संदर्भ में समझने पर आधारित है, न कि सार्वभौमिक सत्य के रूप में।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक धर्म भी कहता है कि परमात्मा ने विभिन्न रूपों में प्रकट होकर संसार के कल्याण के लिए मार्गदर्शन किया, लेकिन वे संदेश और उनके समय के सामाजिक संदर्भों को समझना महत्वपूर्ण है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों को प्रदर्शित करती है, लेकिन इसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में नहीं लिया जा सकता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	**तत्व (Nyaya Element)**	**मुख्य आलोचना**
6	**प्रमाण**	**कुरान के सत्य को बाहरी प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
7	**प्रमाण**	**केवल फरिश्तों के आने से सत्य को प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
8	**व्याप्ति**	**हर घटना का अप्राकृतिक कारण नहीं हो सकता।**
9	**प्रमाण**	**विश्वास आधारित सत्य को तर्क से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
10	**प्रमेय**	**संदेशों को समझने के लिए सामाजिक संदर्भ महत्वपूर्ण हैं।**

निष्कर्ष: इन आयतों में तर्क और प्रमाण के अभाव में विश्वास पर आधारित दावे किए गए हैं। आयतों में तर्क और तात्त्विक दृष्टिकोण का अभाव है, और इनका उद्देश्य केवल विश्वास और कट्टरता को बढ़ावा देना प्रतीत होता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 11

आयत का अनुवाद: "और (उनकी भी यही हालत थी कि) उनके पास कोई रसूल न आया मगर उन लोगों ने उसकी हँसी ज़रुर उड़ाई।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि जब भी कोई रसूल आया, तो लोगों ने उसकी हंसी उड़ाई।**
- **हेतु (Reasoning): यह कथन एक सामान्यीकरण है और यह तर्क करता है कि हर रसूल का मजाक उड़ाया जाता था। यह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ पर आधारित है, जो सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता। हर व्यक्ति या समाज के लिए एक ही दृष्टिकोण नहीं हो सकता।**
- **उदाहरण (Example): यदि हम भारतीय उपमहाद्वीप की बात करें तो कभी-कभी धार्मिक नेताओं के बारे में विभिन्न दृष्टिकोण होते हैं, लेकिन यह कहना कि हर धार्मिक नेता का मजाक उड़ाया जाता है, यह व्यावहारिक और तात्त्विक रूप से गलत है।**
- **निगमन (Conclusion): यह सामान्यीकरण तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि यह हर घटना या व्यक्ति पर लागू नहीं किया जा सकता। इस प्रकार का दृष्टिकोण अप्रासंगिक और खंडन योग्य है।**

आयत 12

आयत का अनुवाद: "हम (गोया खुद) इसी तरह इस (गुमराही) को (उन) गुनाहगारों के दिल में डाल देते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह दावा करती है कि अल्लाह गुनाहगारों के दिल में गुमराही डालता है।
- **हेतु (Reasoning):** यह विचार तर्कसंगत नहीं है क्योंकि इसे सिद्ध नहीं किया जा सकता कि किसी व्यक्ति का गलत रास्ते पर जाना केवल बाहरी शक्ति के कारण होता है। यह आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र विचार के सिद्धांत के खिलाफ है।
- **उदाहरण (Example):** जैसे ही हम जीवन में अपने कर्मों से निर्णय लेते हैं, और हर व्यक्ति को अपने अच्छे या बुरे कर्मों का परिणाम भुगतने का अधिकार होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्यक्तिगत जिम्मेदारी और स्वतंत्र निर्णय के सिद्धांतों के खिलाफ है, और इस प्रकार इसका तार्किक आधार कमजोर है।

आयत 13

आयत का अनुवाद: "ये कुफ़्फ़ार इस (कुरान) पर इमान न लाएँगें और (ये कुछ अनोखी बात नहीं) अगलों के तरीक़े भी (ऐसे ही) रहें है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत दावा करती है कि कुफ़्फ़ार कुरान पर विश्वास नहीं करेंगे और उनके तरीके पहले वाले लोगों जैसे होंगे।
- **हेतु (Reasoning):** यह विचार समाजों के बारे में एक पूर्वनिर्धारित धारा पर आधारित है, और इसे किसी भी समाज के बारे में सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता। यह तात्त्विक और सांस्कृतिक विविधता की अनदेखी करता है।
- **उदाहरण (Example):** यह तर्क उस समय की परिपाटियों पर आधारित है, जैसे पहले लोग किसी भी नए धार्मिक विचार को नकारते थे। लेकिन अब ऐसे उदाहरण हैं जहाँ लोग नए विचारों को अपनाते हैं और उनसे लाभान्वित होते हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक निश्चित पूर्वधारणा और सामान्यीकरण पर आधारित है, जो हर समाज और समय पर लागू नहीं होती। इस दृष्टिकोण को तर्कसंगत रूप से खंडित किया जा सकता है।

आयत 14

आयत का अनुवाद: "और अगर हम अपनी कुदरत से आसमान का एक दरवाज़ा भी खोल दें और ये लोग दिन दहाड़े उस दरवाज़े से (आसमान पर) चढ़ भी जाएँ।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि अगर अल्लाह आसमान का दरवाजा खोल दे और लोग वहाँ चढ़ने लगें, तो लोग इसे भ्रम या जादू कहेंगे।**
- **हेतु (Reasoning): यह विचार व्याप्ति के सिद्धांत को चुनौती देता है। यदि कोई असाधारण घटना होती है, तो उसे भ्रम या जादू कहना उस घटना की असामान्यता का खंडन है। हर असामान्य घटना को तर्कसंगत रूप से समझा जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक समय में भी अनेक असाधारण घटनाएँ हुईं, जिन्हें समय के साथ व्यावहारिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा गया।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के खिलाफ है क्योंकि असाधारण घटनाओं को केवल भ्रम या जादू के रूप में नकारना तर्कसंगत नहीं है।**

आयत 15

आयत का अनुवाद: "तब भी यहीं कहेगें कि हो न हो हमारी आँखें (नज़र बन्दी से) मतवाली कर दी गई हैं या नहीं तो हम लोगों पर जादू किया गया है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि लोग किसी भी असाधारण घटना को नकारेंगे और इसे जादू या भ्रम कहेंगे।**
- **हेतु (Reasoning): यह विचार प्रमाणों और तर्क से इन्कार करता है और केवल भ्रम और जादू पर जोर देता है। यह विश्वास और ज्ञान के प्राकृतिक विकास को नकारता है।**
- **उदाहरण (Example): जब वैज्ञानिक खोजें और नई तकनीकों की शुरुआत होती है, तो पहले लोग उन्हें आश्चर्यजनक मानते हैं, लेकिन बाद में उन्हें तर्क और प्रमाण से समझा जाता है।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाणों की उपेक्षा करती है और केवल व्यक्तिगत दृष्टिकोणों पर आधारित है, जो तार्किक दृष्टि से गलत है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
11	प्रमाण	सामान्यीकरण गलत है, हर व्यक्ति पर लागू नहीं होता।
12	प्रमाण	यह तर्क आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र निर्णय के खिलाफ है।
13	प्रमेय	यह एक पूर्वनिर्धारित धारणा पर आधारित है।
14	व्याप्ति	असाधारण घटनाओं को भ्रम या जादू कहने से व्याप्ति का उल्लंघन होता है।
15	प्रमाण	यह प्रमाणों की उपेक्षा करती है और केवल भ्रम पर जोर देती है।

निष्कर्ष: इन आयतों में तर्कसंगत मूल्यांकन की कमी है और यह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सामान्यीकरण पर आधारित हैं। इन आयतों में मान्य तर्क और प्रमाणों की कमी है, जिससे इनका व्यावहारिक और तार्किक मूल्य कमजोर होता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 16

आयत का अनुवाद: "और हम ही ने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के वास्ते उनके (सितारों से) आरास्ता (सजाया) किया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह ने आसमान में सितारों से बुर्ज बनाए और उन्हें सजाया।
- **हेतु (Reasoning):** यह कथन प्रतीकात्मक या अलंकारिक हो सकता है, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टि से यह सत्यापित नहीं किया जा सकता कि अल्लाह ने विशेष रूप से सितारों से आसमान को सजाया। सितारे प्राकृतिक घटनाएँ हैं और उनका अस्तित्व वैज्ञानिक रूप से समझा जा सकता है।
- **उदाहरण (Example):** आधुनिक खगोलशास्त्र ने सितारों और ग्रहों की उत्पत्ति और संरचना को विस्तार से समझाया है, जो एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में प्रदत्त विचार किसी वैज्ञानिक प्रमाण से मेल नहीं खाते और इसे प्रतीकात्मक रूप से या धार्मिक विश्वासों के संदर्भ में समझा जा सकता है, लेकिन यह तात्त्विक रूप से खंडित किया जा सकता है।

आयत 17

आयत का अनुवाद: "और हर शैतान मरदूद की आमद रफत (आने जाने) से उन्हें महफ़ूज़ रखा।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत दावा करती है कि शैतान के आने जाने से आसमान को सुरक्षित रखा गया।
- **हेतु (Reasoning):** यह एक धार्मिक और अलंकारिक विचार है, जो शैतान की अवधारणा और आसमान के सुरक्षा के साथ जुड़ा हुआ है। इसे प्रमाणित करना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंभव है, क्योंकि शैतान का अस्तित्व और उसकी गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** यह धार्मिक विश्वास है, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण में शैतान की कोई वास्तविकता नहीं होती है। इसलिए इसे केवल एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण के रूप में ही लिया जा सकता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नकारात्मक है, क्योंकि इसे सटीकता से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

आयत 18

आयत का अनुवाद: "मगर जो शैतान चोरी छिपे (वहाँ की किसी बात पर) कान लगाए तो शहाब का दहकता हुआ शोला उसके (खदेड़ने को) पीछे पड़ जाता है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि शैतान को दहकते हुए शोले से खदेड़ा जाता है, अगर वह आसमान की किसी बात पर कान लगाता है।**
- **हेतु (Reasoning): यह कथन पुनः धार्मिक और प्रतीकात्मक है, जो शैतान और दहकते शोले की छवियों को जोड़ता है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अस्पष्ट और अव्यावहारिक है।**
- **उदाहरण (Example): खगोलशास्त्र में हम जानते हैं कि अंतरिक्ष में कोई भौतिक घटना ऐसी नहीं है, जो शैतान के खदेड़ने के रूप में वर्णित हो।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भी तात्त्विक रूप से स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि यह वैज्ञानिक तथ्यों से मेल नहीं खाती और इसे केवल धार्मिक विश्वासों के संदर्भ में ही माना जा सकता है।**

आयत 19

आयत का अनुवाद: "और ज़मीन को (भी अपने मख़लूक़ात के रहने सहने को) हम ही ने फैलाया और इसमें (कील की तरह) पहाड़ों के लंगर डाल दिए और हमने उसमें हर किस्म की मुनासिब चीज़े उगाईं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि अल्लाह ने पृथ्वी को फैलाया और उसमें पहाड़ों के लंगर डाले।**
- **हेतु (Reasoning): पृथ्वी की संरचना और उसके भूविज्ञान को समझने में आधुनिक विज्ञान ने बहुत योगदान दिया है। पहाड़ों का निर्माण प्रकृतिक प्रक्रियाओं जैसे टेक्टोनिक प्लेट्स के सक्रिय होने से होता है, न कि किसी दिव्य शक्ति से लंगर डालने से।**
- **उदाहरण (Example): भूविज्ञान के अनुसार पहाड़ों का निर्माण स्थलीय प्लेटों की गति और अन्य प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा होता है।**

- **निगमन (Conclusion):** इस आयत को भी विज्ञान के संदर्भ में खंडित किया जा सकता है क्योंकि यह प्राकृतिक प्रक्रियाओं को समझने में अव्यावहारिक है।

आयत 20

आयत का अनुवाद: "और हम ही ने उन्हें तुम्हारे वास्ते ज़िन्दगी के साज़ों सामान बना दिए और उन जानवरों के लिए भी जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह ने पृथ्वी पर जानवरों और मनुष्यों के लिए जीवन के सामान बनाए।
- **हेतु (Reasoning):** यह बिंदु पृथ्वी पर जीवन के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ उत्पन्न होने की प्राकृतिक प्रक्रिया की उपेक्षा करता है। जीवन के विकास और विविधता का वैज्ञानिक आधार है।
- **उदाहरण (Example):** जैविक विकास के सिद्धांत के अनुसार, जीवन धीरे-धीरे प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से विकसित हुआ है, न कि किसी दिव्य हस्तक्षेप से।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत को भी प्राकृतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित किया जा सकता है, क्योंकि यह जीवन की उत्पत्ति और विकास के प्राकृतिक तर्कों को नकारता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
16	प्रमाण	वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सितारों की उत्पत्ति और सजावट का कोई प्रमाण नहीं है।
17	प्रमाण	शैतान का अस्तित्व और उसकी गतिविधियों का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

18	**प्रमाण**	**शैतान और शहाब के बारे में दी गई जानकारी को तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित किया जा सकता है।**
19	**प्रमाण**	**पहाड़ों का निर्माण प्राकृतिक प्रक्रियाओं से होता है, न कि किसी दिव्य शक्ति से।**
20	**प्रमाण**	**जीवन के विकास और विविधता का वैज्ञानिक आधार है, इसे दिव्य कारण से जोड़ना तात्त्विक रूप से गलत है।**

निष्कर्ष: इन आयतों में प्राकृतिक घटनाओं और अस्तित्व के बारे में दावा किया गया है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक या गलत प्रतीत होते हैं। इन आयतों के बयानों को तात्त्विक दृष्टिकोण से खंडित किया जा सकता है क्योंकि ये प्राकृतिक प्रक्रियाओं को नकारते हैं और अनावश्यक रूप से दिव्य हस्तक्षेप पर जोर देते हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 21

आयत का अनुवाद: "और हमारे यहाँ तो हर चीज़ के बेषुमार खज़ाने (भरे) पड़े हैं और हम (उसमें से) एक जची तली मिक़दार भेजते रहते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में दावा किया जा रहा है कि अल्लाह के पास बेशुमार खज़ाने हैं और वह समय-समय पर उनमें से कुछ भेजते रहते हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यह धार्मिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, लेकिन इसे वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। प्राकृतिक संसाधनों का वितरण और उनकी उपलब्धता एक जटिल प्रक्रिया है, जिसे भौतिक विज्ञान से समझा जा सकता है, लेकिन धार्मिक दृष्टिकोण से इसे दिव्य इशारा माना जाता है।**

- **उदाहरण (Example): यदि हम देखे तो प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन और वितरण प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानव समाज के आर्थिक तंत्र द्वारा होता है, न कि किसी दिव्य हस्तक्षेप से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से साबित नहीं की जा सकती, क्योंकि इसे केवल धार्मिक विश्वास के रूप में ही लिया जा सकता है।**

आयत 22

आयत का अनुवाद: "और हम ही ने वह हवाएँ भेजी जो बादलों को पानी से (भरे हुए) है फिर हम ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने तुम लोगों को वह पानी पिलाया और तुम लोगों ने तो कुछ उसको जमा करके नहीं रखा था।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि हवाएँ पानी के साथ बादलों को लाती हैं और फिर पानी बरसाकर लोगों को पिलाती हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यह आयत प्राकृतिक जल चक्र को संदर्भित करती है, लेकिन इसे दिव्य हस्तक्षेप के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जल चक्र प्राकृतिक रूप से घटित होता है, जिसमें वाष्पीकरण, संकुचन, और वर्षा की प्रक्रियाएँ शामिल हैं।**
- **उदाहरण (Example): जलवायु विज्ञान के अनुसार, हवाएँ और बादल जल के कणों को वाष्पित करती हैं और फिर वर्षा के रूप में उसे पृथ्वी पर बरसाती हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्राकृतिक प्रक्रियाओं को एक धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका वैज्ञानिक आधार स्पष्ट रूप से मौजूद है। इसे दिव्य हस्तक्षेप के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो तात्त्विक रूप से खंडित किया जा सकता है।**

आयत 23

आयत का अनुवाद: "और इसमें शक नहीं कि हम ही (लोगों को) जिलाते और हम ही मार डालते हैं और (फिर) हम ही (सब के) वाली वारिस हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि अल्लाह जीवन देता है, मरने का कारण बनता है और फिर वह सभी का वारिस है।**
- **हेतु (Reasoning): यह धार्मिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, लेकिन इसका वैज्ञानिक और भौतिक दृष्टिकोण से समर्थन नहीं किया जा सकता। जीवन और मृत्यु का प्राकृतिक आधार जैविक और भौतिक विज्ञान में समझा जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): जीवन और मृत्यु को जैविक, आनुवंशिक, और पारिस्थितिकी तंत्र की प्रक्रियाओं से समझा जा सकता है, जो कि वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तात्त्विक रूप से खंडित की जा सकती है, क्योंकि जीवन और मृत्यु को प्राकृतिक प्रक्रियाओं के संदर्भ में समझा जा सकता है, न कि केवल किसी दिव्य हस्तक्षेप के रूप में।**

आयत 24

आयत का अनुवाद: "और बेषक हम ही ने तुममें से उन लोगों को भी अच्छी तरह समझ लिया जो पहले हो गुज़रे और हमने उनको भी जान लिया जो बाद को आने वाले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि अल्लाह ने पहले के और आने वाले लोगों को पूरी तरह से समझ लिया है।**
- **हेतु (Reasoning): यह आयत भविष्य को जानने और भविष्यवाणी करने की क्षमता के बारे में है। हालांकि, इसे धार्मिक विश्वास के रूप में माना जा सकता है, लेकिन यह भौतिक प्रमाणों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परीक्षण योग्य नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): मानवता के इतिहास को हम ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक प्रमाणों से समझते हैं, जो भविष्य को पूर्वानुमान लगाने की क्षमता की सीमा को निर्धारित करते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से संबंधित है और इसे प्रमाणित करना भौतिक विज्ञान के दृष्टिकोण से असंभव है।**

आयत 25

आयत का अनुवाद: "और इसमें शक नहीं कि तेरा परवरदिगार वही है जो उन सब को (क़यामत में कब्रों से) उठाएगा बेशक वह हिक़मत वाला वाक़िफकार है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया जा रहा है कि अल्लाह ही सभी को क़यामत में कब्रों से उठाएगा।**
- **हेतु (Reasoning): यह आयत धार्मिक विश्वास को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से साबित नहीं किया जा सकता। क़यामत का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): मृत्यु और जीवन के बाद के बारे में कोई भौतिक प्रमाण या अनुभव नहीं है, जो इसे सिद्ध कर सके।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भौतिक प्रमाणों से परे एक धार्मिक विश्वास को व्यक्त करती है, जिसे तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित किया जा सकता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
21	प्रमाण	इसे भौतिक विज्ञान द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
22	प्रमाण	जल चक्र को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है।
23	प्रमाण	जीवन और मृत्यु को प्राकृतिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है।
24	प्रमाण	यह भविष्यवाणी और ज्ञान को एक धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है।
25	प्रमाण	क़यामत का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

निष्कर्ष: इन आयतों में प्राकृतिक घटनाओं और अस्तित्व के बारे में दावा किया गया है, जो भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं हो सकते। ये आयतें धार्मिक विश्वासों और दृष्टिकोणों के अनुरूप हैं, लेकिन तात्त्विक और वैज्ञानिक आधार पर इनका खंडन किया जा सकता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 26

आयत का अनुवाद: "और बेशक हम ही ने आदमी को ख़मीर (गुंधी) दी हुई सड़ी मिट्टी से जो (सूखकर) खन खन बोलने लगे पैदा किया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि इंसान को सड़ी हुई मिट्टी से, जो खन खन बोलने लगे, पैदा किया गया है।**
- **हेतु (Reasoning): यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि आधुनिक जीवविज्ञान के अनुसार, मानव जीवन की उत्पत्ति जैविक प्रक्रियाओं के माध्यम से हुई है, न कि किसी "सड़ी मिट्टी" से। मानव जीवन की उत्पत्ति को डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत से समझा जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): जब हम जीवविज्ञान के परिप्रेक्ष्य से देखें, तो मानव जीवन का जन्म अणुओं और कोशिकाओं के बीच जैविक क्रियाओं से हुआ है, न कि किसी "सड़ी हुई मिट्टी" से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं है, क्योंकि जीवविज्ञान और विकासवाद के सिद्धांत इसे खंडित करते हैं।**

आयत 27

आयत का अनुवाद: "और हम ही ने जिन्नात को आदमी से (भी) पहले वे धुएँ की तेज़ आग से पैदा किया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में दावा किया जा रहा है कि जिन्नात को आग से पैदा किया गया है।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पुष्टि योग्य नहीं है, क्योंकि जिन्नात का अस्तित्व और उनकी उत्पत्ति पर कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। विज्ञान में आग और अन्य प्राकृतिक तत्वों के साथ किसी जीव के उत्पत्ति के बारे में कोई अध्ययन या सबूत नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भौतिक और जैविक विज्ञान में ऐसे किसी भी जीव का अस्तित्व प्रमाणित नहीं है, जो आग से उत्पन्न हुआ हो।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित किया जा सकता है।**

आयत 28

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल वह वक़्त याद करो) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिष्तों से कहा कि मैं एक आदमी को खमीर दी हुयी मिट्टी से (जो सूखकर) खन खन बोलने लगे पैदा करने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि अल्लाह ने फरिश्तों से कहा कि वह एक आदमी को खमीर दी हुई मिट्टी से पैदा करेगा।**
- **हेतु (Reasoning): यह एक धार्मिक कथन है, लेकिन इसका वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह भौतिक और जैविक दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि हम जानते हैं कि मानव जीवन जैविक विकास और कोशिकीय प्रक्रियाओं के माध्यम से उत्पन्न होता है, न कि किसी "खमीर दी हुई मिट्टी" से।**
- **उदाहरण (Example): वैज्ञानिक शोध के अनुसार, जीवन की उत्पत्ति कोशिकाओं और अणुओं के बीच के जटिल रासायनिक प्रतिक्रियाओं के परिणामस्वरूप होती है, न कि किसी विशेष मिट्टी से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत वैज्ञानिक तथ्यों के अनुरूप नहीं है और इसे धार्मिक विश्वास के रूप में ही लिया जा सकता है।**

आयत 29

आयत का अनुवाद: "तो जिस वक़्त मैं उसको हर तरह से दुरुस्त कर चुका और उसमें अपनी (तरफ से) रुह फूँक दूँ तो सब के सब उसके सामने सजदे में गिर पड़ना।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में दावा किया जा रहा है कि जब अल्लाह किसी व्यक्ति में अपनी "रूह" फूँकता है, तो फरिश्ते उसके सामने सजदे में गिर पड़ते हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसे पुष्टि नहीं किया जा सकता। जीवन के उत्पत्ति और आत्मा के सिद्धांत को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्याख्यायित नहीं किया जा सकता, क्योंकि आत्मा को भौतिक या जैविक रूप में मापा नहीं जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): जीवविज्ञान में, जीवन को कोशिकाओं के आधार पर समझा जाता है, जबकि आत्मा या "रूह" का अस्तित्व वैज्ञानिक रूप से साबित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका वैज्ञानिक समर्थन नहीं है।**

आयत 30

आयत का अनुवाद: "ग़रज़ फरिश्ते तो सब के सब सर ब सजूद हो गए।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि जब इंसान में रूह फूँकी गई, तो फरिश्तों ने उसे सजदा किया।**
- **हेतु (Reasoning): यह धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाता है, लेकिन इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। फरिश्तों का अस्तित्व और उनके द्वारा इंसान को सजदा करना केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): विज्ञान में ऐसे किसी प्राणी या ऊर्जा के अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है, जो इंसान को सजदा करने के लिए बाध्य हो।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं हो सकती, क्योंकि यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
26	प्रमाण	खमीर दी हुई सड़ी मिट्टी से जीवन उत्पत्ति का दावा वैज्ञानिक रूप से खंडित है।
27	प्रमाण	जिन्नात का अस्तित्व और उत्पत्ति को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
28	प्रमाण	जीवन की उत्पत्ति को जैविक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, न कि मिट्टी से।
29	प्रमाण	आत्मा का अस्तित्व और रूह के फूँकने का दावा भौतिक रूप से प्रमाणित नहीं हो सकता।
30	प्रमाण	फरिश्तों के अस्तित्व और सजदे का दावा भौतिक रूप से खंडित किया जा सकता है।

निष्कर्ष: इन आयतों में जीवन की उत्पत्ति, जिन्नात, और फरिश्तों के द्वारा सजदा करने के बारे में जो दावे किए गए हैं, वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित किए जा सकते हैं। यह आयतें धार्मिक विश्वासों और दृष्टिकोणों पर आधारित हैं, लेकिन तात्त्विक और वैज्ञानिक आधार पर इनका खंडन किया जा सकता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 31

आयत का अनुवाद: "मगर इबलीस (मलऊन) की उसने सजदा करने वालों के साथ शामिल होने से इन्कार किया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में इबलीस का दावा किया गया है कि उसने सजदा करने से इन्कार किया।**
- **हेतु (Reasoning): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से है, लेकिन वैज्ञानिक या तात्त्विक रूप से इसे खंडित करना संभव नहीं है, क्योंकि इबलीस और सजदा करने के संदर्भ में कोई भौतिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह आयत मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से दी जाती है।**
- **उदाहरण (Example): धर्म और साहित्य में शैतान के इन्कार के दृष्टांत मिलते हैं, लेकिन यह भौतिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वासों और शास्त्रों पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 32

आयत का अनुवाद: "(इस पर ख़ुदा ने) फरमाया आओ शैतान आख़िर तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों के साथ शामिल न हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यहाँ पर भगवान इबलीस से पूछते हैं कि उसने सजदा क्यों नहीं किया।**
- **हेतु (Reasoning): यह आयत भी धार्मिक दृष्टिकोण से जुड़ी हुई है, लेकिन इस पर कोई भौतिक या वैज्ञानिक तर्क नहीं है। शैतान के अस्तित्व को साबित नहीं किया जा सकता, और इसलिए इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आलोचना नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): धार्मिक ग्रंथों में इबलीस के बारे में विभिन्न कथाएँ हैं, लेकिन ये वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सत्यापित नहीं की जा सकतीं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भी एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका भौतिक आधार नहीं है।**

आयत 33

आयत का अनुवाद: "वह (ढिठाई से) कहने लगा मैं ऐसा गया गुज़रा तो हूँ नहीं कि ऐसे आदमी को सजदा कर बैठूँ जिसे तूने सड़ी हुयी खन खन बोलने वाली मिट्टी से पैदा किया है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इबलीस का यह बयान कि वह एक व्यक्ति को सजदा नहीं करेगा, जो सड़ी हुई खन खन बोलने वाली मिट्टी से पैदा हुआ है।**
- **हेतु (Reasoning): यह विचार एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो शारीरिक और मानसिक स्थिति को दर्शाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, इंसान की उत्पत्ति की व्याख्या जैविक और रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा की जाती है, न कि मिट्टी से।**
- **उदाहरण (Example): जीवविज्ञान के सिद्धांत के अनुसार, इंसान का अस्तित्व जटिल जैविक प्रक्रियाओं का परिणाम है, न कि मिट्टी से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत किसी विशेष धार्मिक दृष्टिकोण से है, और इसका वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

आयत 34

आयत का अनुवाद: "ख़ुदा ने फरमाया (नहीं तू) तो बेहिश्त से निकल जा (दूर हो) कि बेशक तू मरदूद है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में इबलीस को स्वर्ग से निष्कासित किया जा रहा है।**
- **हेतु (Reasoning): यह भी एक धार्मिक दृष्टिकोण है, और इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। स्वर्ग और नर्क के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए कोई भौतिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह एक आध्यात्मिक या धार्मिक विश्वास है।**
- **उदाहरण (Example): किसी व्यक्ति को स्वर्ग या नर्क से निष्कासित करने का सिद्धांत भौतिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित नहीं की जा सकती।

आयत 35

आयत का अनुवाद: "और यक़ीनन तुझ पर रोज़े में जज़ा तक फिटकार बरसा करेगी।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इबलीस पर "रोज़े में जज़ा" यानी सजा का दावा किया गया है।
- **हेतु (Reasoning):** यह आयत भी धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। सजा देने के सिद्धांत को भौतिक या वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यह एक आध्यात्मिक और धार्मिक प्रक्रिया है।
- **उदाहरण (Example):** धार्मिक ग्रंथों में जो सजा का उल्लेख होता है, वह मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से होती है, जिसे भौतिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत भी धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित नहीं किया जा सकता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
31	प्रमाण	इबलीस का इन्कार और धार्मिक संदर्भ के आधार पर खंडित नहीं किया जा सकता।
32	प्रमाण	इबलीस का जवाब और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
33	प्रमाण	इबलीस का बयान जैविक दृष्टिकोण से सही नहीं है, जीवन की उत्पत्ति

		पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडन किया जा सकता है।
34	**प्रमाण**	**स्वर्ग से निष्कासन और धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका भौतिक प्रमाण नहीं है।**
35	**प्रमाण**	**सजा और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

निष्कर्ष: इन आयतों में इबलीस के इन्कार, सजा और स्वर्ग से निष्कासन के बारे में जो दावे किए गए हैं, वे धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और इनका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। ये आयतें धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकती हैं, लेकिन तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इनका खंडन किया जा सकता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 36

आयत का अनुवाद: "शैतान ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार ख़ैर तू मुझे उस दिन तक की मोहलत दे जबकि (लोग दोबारा ज़िन्दा करके) उठाए जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): शैतान ने खुदा से मोहलत मांगी है, ताकि वह क़यामत के दिन तक जीवित रहे।**
- **हेतु (Reasoning): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से है, और इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। जीवन और मृत्यु का सवाल पारंपरिक रूप से धार्मिक विश्वासों से जुड़ा हुआ है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): शैतान की मोहलत माँगने के संदर्भ में कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। धार्मिक ग्रंथों में ही ऐसी कथाएँ मिलती हैं।**

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक धार्मिक कथा पर आधारित है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है, जिससे इसे तात्त्विक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित किया जा सके।

आयत 37

आयत का अनुवाद: "ख़ुदा ने फरमाया वक़्त मुक़र्रर (के दिन तक) तुझे मोहलत दी गई।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** ख़ुदा ने शैतान को निश्चित समय तक मोहलत दी है।
- **हेतु (Reasoning):** यह आयत धार्मिक संदर्भ में है, और इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। क़यामत का समय और शैतान के अस्तित्व को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** क़यामत और जीवन के बाद के दृष्टांत वैज्ञानिक अध्ययन से परे होते हैं। वे केवल धार्मिक विचारधाराओं में समाहित होते हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित नहीं की जा सकती।

आयत 38

आयत का अनुवाद: "उन शैतान ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार चूंकि तूने मुझे रास्ते से अलग किया मैं भी उनके लिए दुनिया में (साज़ व सामान को) उम्दा कर दिखाऊँगा और सबको ज़रुर बहकाऊँगा।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** शैतान का दावा है कि वह दुनिया में अच्छे सामग्रियों के साथ मनुष्यों को बहकाएगा।

- **हेतु (Reasoning): यह आयत मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस पर कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है, क्योंकि शैतान का अस्तित्व एक विश्वास है, जिसे सिद्ध नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): इंसान के बहकाने का तत्व एक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, लेकिन इसे किसी अव्याख्येय आध्यात्मिक शक्ति से जोड़ना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उचित नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें शैतान के कृत्यों को धार्मिक विश्वासों के रूप में दिखाया गया है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित किया जा सकता है।**

आयत 39

आयत का अनुवाद: "मगर उनमें से तेरे निरे खुरे ख़ास बन्दे (कि वह मेरे बहकाने में न आएँगें)।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): शैतान यह कहता है कि वह कुछ विशेष व्यक्तियों को अपने बहकावे में नहीं ला पाएगा।**
- **हेतु (Reasoning): यह भी एक धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। यह विचार एक विश्वास पर आधारित है कि कुछ लोग शैतान के बहकावे से बच जाते हैं। यह सिद्धांत भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो व्यक्ति की आस्था और नैतिकता के कारण वे किसी भी प्रकार के बहकावे से बच सकते हैं, लेकिन इसे एक धार्मिक विश्वास के तौर पर स्वीकार किया जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
36	प्रमाण	शैतान का मोहलत मांगना धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
37	प्रमाण	यह आयत क़यामत के दिन की अवधारणा पर आधारित है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खंडित नहीं की जा सकती।
38	प्रमाण	शैतान का बहकाने का दावा धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
39	प्रमाण	शैतान द्वारा कुछ विशेष लोगों को बहकाने से बचाने का दावा भी धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।

निष्कर्ष: इन आयतों में शैतान की मोहलत, उसके बहकाने और विशिष्ट व्यक्तियों को बचाने के बारे में जो दावे किए गए हैं, वे धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और इनका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। ये कथाएँ धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकती हैं, लेकिन तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इनका खंडन किया जा सकता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 41
आयत का अनुवाद:
"ख़ुदा ने फरमाया कि यही राह सीधी है कि मुझ तक (पहुँचती) है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया गया है कि केवल ख़ुदा की राह ही सही है, जो उसकी ओर पहुँचती है।**

- **हेतु (Reasoning):** यह दावा बिना किसी तर्क या प्रमाण के किया गया है, जबकि सत्य की पहचान के लिए तर्कसंगत और प्रामाणिक मार्ग का होना आवश्यक है।
- **उदाहरण (Example):** वैदिक दर्शन में सत्य की पहचान ज्ञान, अनुभूति और तर्क से होती है, न कि केवल किसी एक व्यक्ति या सत्ता के अनुसार।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना तर्क के "सही मार्ग" का दावा करती है, जो न्याय और तर्क के सिद्धांतों के विपरीत है। मानवता के लिए एकमात्र "सही रास्ता" का दावा आदर्श नहीं हो सकता।

आयत 42
आयत का अनुवाद:
"जो मेरे मुख़लिस (ख़ास बन्दे) हैं उन पर तुझसे किसी तरह की हुकूमत न होगी, मगर हाँ गुमराहों में से जो तेरी पैरवी करे, उस पर तेरा वार चल जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह दावा करती है कि ख़ास लोग शैतान के प्रभाव से बचेंगे, लेकिन गुमराह लोग शैतान के नियंत्रण में होंगे।
- **हेतु (Reasoning):** यह तर्क सिर्फ एक विश्वास पर आधारित है, बिना किसी ठोस प्रमाण या वैज्ञानिक कारण के। तर्कसंगत और न्यायपूर्ण प्रणाली में हर व्यक्ति को अपनी स्वतंत्र इच्छा और तर्क द्वारा सत्य की खोज करने का अधिकार होता है।
- **उदाहरण (Example):** वेदांत में तर्क और आत्म-ज्ञान को महत्वपूर्ण माना जाता है, न कि किसी बाहरी शक्ति द्वारा नियंत्रित होने को।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और मानवीय स्वतंत्रता और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 43
आयत का अनुवाद:
"और हाँ ये भी याद रहे कि उन सब के वास्ते (आख़िरी) वायदा बस जहन्नम है जिसके सात दरवाज़े होंगे।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि जो लोग गुमराह होंगे, उनके लिए अंतिम परिणाम जहन्नम (नर्क) होगा।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा बिना किसी वैज्ञानिक या तार्किक आधार के किया गया है, और यह केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में परिणामों को तर्क और कर्मों के आधार पर समझा जाता है, न कि केवल एक अस्पष्ट विश्वास के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय दर्शन के अनुसार तर्कसंगत रूप से "कर्मों" और "परिणामों" का मूल्यांकन करने के बजाय अंधविश्वास को बढ़ावा देती है।**

आयत 44
आयत का अनुवादः
"हर (दरवाज़े में जाने) के लिए उन गुमराहों की अलग अलग टोलियाँ होंगी।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि गुमराह लोगों के लिए जहन्नम के दरवाजों के अलग-अलग टोलियाँ होंगी।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा तर्क और विज्ञान से मेल नहीं खाता, क्योंकि किसी समूह या समुदाय को सिर्फ एक धार्मिक विश्वास के आधार पर परिभाषित करना तर्कसंगत नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक साहित्य में व्यक्ति के कर्म और स्वभाव के आधार पर उसे सही मार्ग पर चलने की सलाह दी जाती है, न कि केवल एक निश्चित विश्वास के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क और सामान्य न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति या समूह को उनके विश्वासों के आधार पर विभाजित करती है।**

आयत 45

आयत का अनुवाद:

"और परहेज़गार तो बेहष्त के बाग़ों और चाश्मों में यक़ीनन होंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि परहेज़गार लोग स्वर्ग (बेहष्त) में होंगे।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा कोई प्रामाणिक या वैज्ञानिक आधार नहीं प्रस्तुत करता। न्याय दर्शन में किसी चीज़ को सत्य मानने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है।**
- **उदाहरण (Example): सनातन धर्म में, कर्तव्य और कर्मों के परिणाम के रूप में व्यक्ति का भविष्य तय होता है, न कि किसी अज़ेय या अव्याख्येय स्थान के बारे में बस विश्वास के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत वास्तविक तर्क और प्रमाण से रहित है और इसे विश्वास आधारित माना जा सकता है, जो न्याय और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
41	प्रमाण (Valid Knowledge)	नाम मात्र से कश्ती संचालन का दावा तर्कहीन है।
42	हेतु (Reason)	गुमराहों के लिए शैतान का नियंत्रण बिना तर्क के।
43	प्रमेय (Object of Knowledge)	बिना तर्क के नर्क का सिद्धांत।
44	व्याप्ति (Invariable Concomitance)	गुमराहों के लिए दरवाजों की परिभाषा तर्कहीन है।
45	प्रमाण (Valid Knowledge)	स्वर्ग का दावा प्रमाण से रहित है।

निष्कर्ष

इन आयतों में तार्किक और न्याय दर्शन के सिद्धांतों का अभाव है। इनमें विश्वास और अंधविश्वास के तत्वों का प्रवेश हुआ है, जो मानवता और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ है। इन आयतों में न तो किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार पर विचार किया गया है, न ही इनकी सार्वभौमिकता और न्याय का समर्थन किया गया है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 46

आयत का अनुवाद:

"(दाख़िले के वक़्त फरिश्ते कहेगें कि) उनमें सलामती इत्मिनान से चले चलो।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि जन्नत में प्रवेश करते समय फरिश्ते लोगों से सलामती के साथ चलने को कहेंगे।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसमें कोई तर्क या प्रमाण नहीं है कि ऐसा होगा। किसी वस्तु के बारे में किसी वास्तविक वैज्ञानिक या अनुभवात्मक ज्ञान की आवश्यकता होती है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, किसी घटना या भविष्यवाणी के लिए प्रमाणित और तर्कसंगत आधार की आवश्यकता होती है। यहां यह विश्वास और शाब्दिक आश्वासन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी तर्क और प्रमाण के दावा करती है कि फरिश्ते सलामती से चलते हुए बात करेंगे, जो न्याय दर्शन के तत्वों के खिलाफ है।**

आयत 47

आयत का अनुवाद:

"और (दुनिया की तकलीफों से) जो कुछ उनके दिल में रंज था उसको भी हम निकाल देगें और ये बाहम एक दूसरे के आमने सामने तख़्तों पर इस तरह बैठे होगें जैसे भाई भाई।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि जन्नत में लोग अपने दिलों के सभी कष्टों से मुक्त होंगे और भाई-भाई की तरह बैठेंगे।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा तर्क और व्यावहारिकता से मेल नहीं खाता। दिलों के कष्टों को समाप्त करना और "भाई-भाई" की तरह बैठना केवल एक धार्मिक विचार है, जिसे वैज्ञानिक या तर्कसंगत रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, यह माना जाता है कि किसी भी घटनाक्रम के परिणामों को तर्कसंगत आधार पर देखा जाना चाहिए, न कि केवल विश्वास या उम्मीद के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्यावहारिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से प्रमाण से रहित है। यह सिर्फ एक धार्मिक विचार प्रस्तुत करती है, जो मानवता के व्यापक दृष्टिकोण से निष्पक्ष नहीं है।**

आयत 48
आयत का अनुवाद:
"उनको बहिश्त में तकलीफ छुएगी भी तो नहीं और न कभी उसमें से निकाले जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि जन्नत में रहने वालों को कभी भी कोई तकलीफ नहीं होगी और उन्हें वहाँ से निकाला नहीं जाएगा।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा भी कोई ठोस तर्क या प्रमाण प्रस्तुत नहीं करता। कोई भी स्थान या स्थिति जिसमें सुख और शांति का दावा किया जाता है, उसे तर्क और प्रमाण से समझा जाना चाहिए, जैसे प्राकृतिक प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर।**
- **उदाहरण (Example): वैदिक दर्शन में, जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों को स्वीकृत किया जाता है और उनके समाधान के लिए कर्मों और ज्ञान के माध्यम से मार्गदर्शन किया जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत मानव अनुभव और न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती है। यह तर्कसंगत प्रमाण के बिना केवल विश्वास पर आधारित है।**

आयत 49

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) मेरे बन्दों को आगाह करो कि बेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है। यह केवल अल्लाह की शक्ति और अनुकम्पा को परिभाषित करता है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार किसी भी अवधारणा को प्रमाणित करना जरूरी है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में प्रत्येक दावे के लिए प्रमाण और तर्क की आवश्यकता होती है, जैसे धर्मग्रंथों में किसी कथन को प्रमाणित करना आवश्यक है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के विश्वास पर आधारित है और न्याय दर्शन के अनुसार इसे वैज्ञानिक या तर्कसंगत दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता।**

आयत 50

आयत का अनुवाद:
"मगर साथ ही इसके (ये भी याद रहे कि) बेशक मेरा अज़ाब भी बड़ा दर्दनाक अज़ाब है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि अल्लाह का अज़ाब भी बहुत दर्दनाक है।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है। न्याय दर्शन में, किसी भी प्रकार के दावे को तर्क और प्रमाण से सही ठहराया जाता है।**

- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार किसी भी खतरनाक या दर्दनाक स्थिति का सामना करने के लिए तर्क और कर्म आधारित मार्गदर्शन आवश्यक है, न कि सिर्फ भय दिखाने वाली चेतावनी।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी प्रमाण और तर्क के भय उत्पन्न करने वाली है और न्याय दर्शन के सिद्धांतों के विपरीत है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
46	प्रमेय (Object of Knowledge)	सलामती का दावा तर्कसंगत नहीं।
47	व्याप्ति (Invariable Concomitance)	दिलों के कष्टों का समाप्त होना तर्कसंगत नहीं।
48	प्रमाण (Valid Knowledge)	जन्नत में तकलीफ का न होना बिना तर्क के।
49	प्रमाण (Valid Knowledge)	अल्लाह का बख्शना कोई प्रमाण नहीं।
50	प्रमेय (Object of Knowledge)	अज़ाब का दावा तर्क और प्रमाण से रहित।

निष्कर्ष

इन आयतों में तर्क और न्याय दर्शन के सिद्धांतों का अभाव है। यह केवल विश्वास और डर को बढ़ावा देती हैं, जो मानवता के तर्कसंगत और न्यायपूर्ण दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता। इन आयतों में न तो किसी घटना या प्रक्रिया के लिए ठोस प्रमाण हैं, न ही यह किसी व्यावहारिक या तार्किक आधार पर आधारित हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 51

आयत का अनुवाद:

"और उनको इबराहीम के मेहमान का हाल सुना दो।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि इब्राहीम के मेहमानों के बारे में बात की जाएगी।**
- **हेतु (Reasoning): यहाँ पर कोई विशेष तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है कि ये मेहमान किस रूप में आए थे और उनके आगमन का उद्देश्य क्या था। यह केवल एक कथन है, जिसके पीछे कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, किसी घटना को समझने के लिए तर्क और प्रमाण की आवश्यकता होती है। यहाँ पर यह घटना केवल एक कथा के रूप में प्रस्तुत की गई है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी ठोस प्रमाण और तर्क के एक घटना का उल्लेख करती है। यह महज एक बयान है, जो तर्कसंगत नहीं है।**

आयत 52

आयत का अनुवाद:

"जब ये इबराहीम के पास आए तो (पहले) उन्होंने सलाम किया इबराहीम ने (जवाब सलाम के बाद) कहा हमको तो तुम से डर मालूम होता है।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इब्राहीम ने अपने मेहमानों से डर का इज़हार किया।**
- **हेतु (Reasoning): यहाँ इब्राहीम के डर को एक मानवीय प्रतिक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेकिन यह प्रतिक्रिया बिना किसी ठोस आधार के दिखायी गई है। मेहमानों को देखकर डर महसूस करना केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया है, जिसका तर्क और प्रमाण नहीं दिया गया है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में यह माना जाता है कि किसी भी घटना या प्रतिक्रिया को प्रमाणित किया जाना चाहिए, विशेष रूप से जब वह किसी के मानसिक या भावनात्मक स्थिति को प्रभावित करती हो।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक भावनात्मक प्रतिक्रिया को दिखाती है, जो बिना किसी प्रमाण या तर्क के है। यह केवल एक स्वाभाविक मनोविज्ञान की स्थिति है, लेकिन तर्कसंगत नहीं।**

आयत 53

आयत का अनुवाद:

"उन्होंने कहा आप मुत्तलिक़ ख़ौफ न कीजिए (क्योंकि) हम तो आप को एक (दाना व बीना) फरज़न्द (के पैदाइश) की खुशख़बरी देते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): मेहमानों ने इब्राहीम को बेटे की खुशख़बरी दी।
- हेतु (Reasoning): यहाँ यह दावा किया जा रहा है कि इब्राहीम को बेटा होगा, जो प्राकृतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संभावित नहीं है। एक वृद्ध व्यक्ति को संतान की उम्मीद दिलाना बिना किसी ठोस प्रमाण के विश्वास पर आधारित है।
- उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, किसी भी घटना का दावा करने से पहले इसके प्रमाण की आवश्यकता होती है। इस आयत में इस प्रकार के घटना के लिए कोई प्रमाण नहीं है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी प्रमाण के एक असंभव घटना का दावा करती है, जो न्याय और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 54

आयत का अनुवाद:

"इब्राहीम ने कहा क्या मुझे ख़ुषख़बरी (बेटा होने की) देते हो जब मुझे बुढ़ापा छा गया।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इब्राहीम ने बुढ़ापे के बावजूद बेटे की खुशख़बरी पर संदेह जताया।
- हेतु (Reasoning): यह संदेह प्राकृतिक रूप से उचित है, क्योंकि एक वृद्ध व्यक्ति के लिए संतान की संभावना बहुत कम होती है। यहाँ पर इब्राहीम का संदेह केवल एक मानवीय प्रतिक्रिया है और इसका कोई ठोस तर्क नहीं दिया गया है।

- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में तर्क का महत्वपूर्ण स्थान है, और यदि कोई घटना असंभव प्रतीत होती है, तो उस पर संदेह करना स्वाभाविक है। यहाँ, बुढ़ापे में संतान की संभावना तर्कसंगत रूप से कम है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत इब्राहीम के संदेह को दर्शाती है, जो तर्कसंगत है, लेकिन फिर भी पूरी घटना बिना किसी तर्क के भविष्यवाणी के रूप में प्रस्तुत की जाती है।**

आयत 55

आयत का अनुवाद:

"वह फरिश्ते बोले हमने आप को बिल्कुल ठीक खुशख़बरी दी है तो आप (बारगाह ख़ुदा बन्दी से) ना उम्मीद न हो।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): फरिश्तों ने इब्राहीम को खुशख़बरी दी और उन्हें निराश नहीं होने को कहा।**
- **हेतु (Reasoning): यह दावा केवल एक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई ठोस तर्क या वैज्ञानिक आधार नहीं है। किसी भविष्यवाणी या घोषणा को बिना प्रमाण के स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में यह माना जाता है कि किसी भी घटना को स्वीकार करने से पहले उसके प्रमाण की आवश्यकता होती है। यहाँ केवल विश्वास की बात की जा रही है, जो तर्कसंगत नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी प्रमाण के एक भावनात्मक प्रतिक्रिया पर आधारित है। यह केवल विश्वास और उम्मीद का प्रचार करती है, जो तर्कसंगत दृष्टिकोण से उचित नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
51	प्रमेय (Object of Knowledge)	इब्राहीम के मेहमानों का उल्लेख बिना प्रमाण के।

52	**हेतु (Reason)**	**इब्राहीम का डर बिना तर्क के।**
53	**प्रमाण (Valid Knowledge)**	**बेटे की खुशख़बरी का दावा बिना प्रमाण के।**
54	**प्रमेय (Object of Knowledge)**	**बुढ़ापे में संतान की संभावना का संदेह तर्कसंगत।**
55	**प्रमाण (Valid Knowledge)**	**खुशख़बरी का दावा केवल विश्वास पर आधारित।**

निष्कर्ष

इन आयतों में बहुत सारे तर्क और प्रमाण का अभाव है। घटनाएँ विश्वास और आश्वासन पर आधारित हैं, जो न्याय दर्शन और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ हैं। इन आयतों में कोई भी घटना या भविष्यवाणी प्रमाणित नहीं है, और यह केवल धार्मिक विश्वास के आधार पर प्रस्तुत की गई है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 56

आयत का अनुवाद:

"इबराहीम ने कहा गुमराहों के सिवा और ऐसा कौन है जो अपने परवरदिगार की रहमत से ना उम्मीद हो।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इब्राहीम का कहना है कि केवल गुमराह ही अपने परवरदिगार की रहमत से निराश हो सकते हैं।**
- **हेतु (Reasoning): यह कथन एक सामान्यीकरण है, जो सभी मानवता के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता। परवरदिगार की रहमत पर विश्वास एक आस्थावादी दृष्टिकोण है, लेकिन इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य मानना तर्कसंगत नहीं है। यह एक भावनात्मक स्थिति है, न कि वस्तुनिष्ठ प्रमाण।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में कहा जाता है कि किसी भी सामान्यीकरण को सावधानी से देखना चाहिए, क्योंकि एक व्यक्तिपरक अनुभव को सभी पर लागू नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और इससे सामान्य मानव अनुभवों का उचित विश्लेषण नहीं किया गया है।**

आयत 57

आयत का अनुवाद:

"(फिर) इबराहीम ने कहा ऐ (ख़ुदा के) भेजे हुए (फरिश्तौं) तुम्हें आख़िर क्या मुहिम दर पेश है।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इब्राहीम ने फरिश्तों से उनके मिशन के बारे में पूछा।
- हेतु (Reasoning): यहाँ इब्राहीम का प्रश्न है, जो स्पष्ट रूप से जिज्ञासा से उत्पन्न हुआ है। लेकिन फरिश्तों के जवाब के पहले ही यह घटना घटित होती है, और इसे बिना किसी प्रमाण और तर्क के प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार का संवाद केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।
- उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में किसी भी प्रश्न का उत्तर प्रमाण और तर्क पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल शाश्वत विश्वास पर।
- निगमन (Conclusion): यह आयत तर्कसंगत या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं मानी जा सकती, क्योंकि इसमें प्रमाण या तर्क का अभाव है।

आयत 58

आयत का अनुवाद:

"उन्होंने कहा कि हम तो एक गुनाहगार क़ौम की तरफ (अज़ाब नाज़िल करने के लिए) भेजे गए हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): फरिश्तों का कहना है कि वे एक पापी क़ौम पर अज़ाब भेजने के लिए भेजे गए हैं।
- हेतु (Reasoning): यह कथन केवल एक भविष्यवाणी है, जिसे बिना किसी तर्क या प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है। किसी समाज पर दंड का निर्धारण केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो तर्कसंगत और वैज्ञानिक नहीं है।

- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में घटनाओं और उनके परिणामों का निर्धारण प्राकृतिक कारणों और तर्कों पर आधारित होता है। इस आयत में यह केवल विश्वास और धार्मिक घोषणा पर निर्भर है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क और प्रमाण के बजाय धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे तर्कसंगत रूप से सही नहीं माना जा सकता।**

आयत 59

आयत का अनुवाद:

"मगर लूत के लड़के वाले कि हम उन सबको ज़रुर बचा लेगें मगर उनकी बीबी जिसे हमने ताक लिया है (कि वह ज़रुर अपने लड़के बालों के) पीछे (अज़ाब में) रह जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): फरिश्तों ने यह कहा कि वे लूत के परिवार को बचा लेंगे, लेकिन उसकी पत्नी को छोड़ देंगे।**
- **हेतु (Reasoning): यह कथन बिना किसी ठोस प्रमाण या तर्क के किया गया है। किसी विशेष व्यक्ति के लिए दंड का निर्धारण केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में किसी भी व्यक्ति के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार और निर्णय तर्कसंगत और प्रमाणित होना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को किसी कारण से बचाने या न बचाने का निर्णय केवल विश्वास के आधार पर नहीं लिया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण और तर्क के एक धार्मिक और विश्वास आधारित निर्णय को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 60

आयत का अनुवाद:

"कि वह ज़रुर (अपने लड़के बालों के) पीछे (अज़ाब में) रह जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि लूत की पत्नी को अज़ाब में रहना पड़ेगा।**
- **हेतु (Reasoning): यह कथन बिना किसी तर्क और प्रमाण के किया गया है। किसी विशेष व्यक्ति के लिए दंड का निर्धारण केवल विश्वास पर आधारित है, जो तार्किक दृष्टिकोण से उचित नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में यह माना जाता है कि किसी भी निर्णय का आधार प्रमाण और तर्क होना चाहिए, न कि केवल विश्वास और धार्मिक कथन।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भी केवल विश्वास पर आधारित है और किसी तर्कसंगत या वैज्ञानिक सिद्धांत से प्रमाणित नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
56	प्रमेय (Object of Knowledge)	गुमराहों के प्रति सामान्यीकरण बिना प्रमाण के।
57	हेतु (Reason)	सवाल और जवाब तर्कसंगत नहीं।
58	प्रमाण (Valid Knowledge)	पापी क़ौम पर अज़ाब का निर्धारण बिना प्रमाण के।
59	प्रमाण (Valid Knowledge)	लूत की पत्नी को छोड़ने का निर्णय केवल विश्वास पर आधारित।
60	प्रमाण (Valid Knowledge)	दंड का निर्धारण केवल विश्वास पर आधारित।

निष्कर्ष
इन आयतों में बिना प्रमाण और तर्क के धार्मिक घटनाओं और निर्णयों को प्रस्तुत किया गया है। ये आयतें केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जिनमें तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार का अभाव है। न्याय दर्शन और तर्क के सिद्धांतों के अनुसार, इन आयतों को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 66

आयत का अनुवाद:
"कि बस सुबह होते होते उन लोगों की जड़ काट डाली जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
आयत में यह कहा गया है कि "सुबह होते ही उन लोगों की जड़ काट डाली जाएगी", जो प्राकृतिक या सांस्कृतिक घटनाओं के आधार पर नहीं है।

हेतु (Reasoning):
यह कथन किसी तर्क या वैज्ञानिक प्रमाण पर आधारित नहीं है। जड़ काटने का संदर्भ प्रतीकात्मक हो सकता है, लेकिन इसे वास्तविकता के तौर पर प्रस्तुत किया गया है।

उदाहरण (Example):
वैदिक दर्शन में, प्राकृतिक घटनाओं का वर्णन तर्क और कारण-प्रतिकार के सिद्धांतों से किया गया है। अज्ञेय शक्तियों या अलौकिक हस्तक्षेप को वास्तविक घटना की तरह प्रस्तुत करना, न्याय दर्शन के अनुसार अप्राकृतिक है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्कसंगत या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समर्थित नहीं है, और अलौकिक हस्तक्षेप को प्रमाणित करने के लिए इसका उपयोग किया गया है, जो असंगत और अप्राकृतिक है।

आयत 67

आयत का अनुवाद:
"और (ये बात हो रही थीं कि) शहर के लोग (मेहमानों की ख़बर सुन कर बुरी नीयत से) खुशियाँ मनाते हुए आ पहुँचे।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
शहर के लोग खुशियाँ मनाते हुए आ पहुँचे, यह एक सामाजिक या सांस्कृतिक घटना का वर्णन है।

हेतु (Reasoning):
शहर के लोग बुरी नीयत से आ रहे थे, यह आरोप बिना तर्क या कारण के किया गया। इस कथन में किसी प्रकार का प्रमाण नहीं है कि खुशियाँ मनाना बुरी नीयत से जुड़ा होता है।

उदाहरण (Example):
भारत में, खुशी और उत्सव समाज की सकारात्मक घटनाओं से जुड़ी होती है, और यह केवल बुरी नीयत से नहीं जुड़ा होता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक सामान्य सामाजिक गतिविधि को संदिग्ध रूप में प्रस्तुत करती है, बिना किसी तर्क या प्रमाण के, जो मानवता के विचार से अनुपयुक्त है।

आयत 68

आयत का अनुवादः
"लूत ने (उनसे कहा) कि ये लोग मेरे मेहमान हैं तो तुम (इन्हें सताकर) मुझे रुसवा बदनाम न करो।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
लूत ने अपनी मेहमाननवाजी का बचाव किया और उन्हें अपमान से बचाने का प्रयास किया।

हेतु (Reasoning):
यह कथन तर्क के बजाय नैतिक आधार पर आधारित है। हालांकि मेहमाननवाजी का आदर्श महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे क़ानूनी और तर्कसंगत आधार पर स्पष्ट करना ज़रूरी था।

उदाहरण (Example):
हमारे समाज में, मेहमाननवाजी का महत्व है, लेकिन इसे सख्त नैतिक दृष्टिकोण से देखा जाता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत किसी नैतिक स्थिति को दिखाती है, लेकिन बिना तर्क या निष्कलंक प्रमाण के किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचती।

आयत 69

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा से डरो और मुझे ज़लील न करो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
लूत ने अपने समुदाय से भगवान से डरने और उन्हें अपमानित न करने का आग्रह किया।

हेतु (Reasoning):
यह वचन किसी तर्कसंगत प्रमाण पर आधारित नहीं है, बल्कि केवल आध्यात्मिक डर और नैतिक आग्रह पर आधारित है।

उदाहरण (Example):
धार्मिक और नैतिक अपील में अक्सर तर्कसंगत दलीलें या प्रमाण का अभाव होता है। इसका प्रभाव केवल विश्वासियों पर पड़ता है, न कि तर्कसंगत रूप से सभी पर।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्कसंगत या प्रमाणित आधार पर नहीं, बल्कि केवल विश्वास और नैतिकता पर आधारित है।

आयत 70

आयत का अनुवाद:
"वह लोग कहने लगे क्यों जी हमने तुम को सारे जहाँन के लोगों (के आने) की मनाही नहीं कर दी थी।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि शहर के लोग लूत से यह कह रहे हैं कि हमने तुम्हें अपने आदेशों से क्यों नहीं रोका।

हेतु (Reasoning):
यह कथन तर्कसंगत नहीं है क्योंकि यह आलोचना करने का तरीका है, न कि संवाद का। संवाद और सुधार के लिए तर्कसंगत तरीके से चर्चा की जानी चाहिए थी।

उदाहरण (Example):
हमारे समाज में, अपवित्रता या अपराध का विरोध किया जाता है, लेकिन इसे केवल बुराई से रोकने का प्रयास नहीं होता, बल्कि उस पर तर्कसंगत संवाद और समाधान की खोज होती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत संवाद और समझ के बजाय, मात्र आरोप और निंदा पर आधारित है, जो न्याय और तर्क के सिद्धांत के खिलाफ है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
66	प्रमाण	बिना वैज्ञानिक आधार के अलौकिक हस्तक्षेप की घोषणा।
67	प्रमेय	खुशी और उत्सव को बुरी नीयत से जोड़ने का आरोप बिना

		प्रमाण के।
68	हेतु	नैतिक आग्रह के आधार पर तर्कसंगत विश्लेषण का अभाव।
69	प्रमाण	बिना तर्क के आध्यात्मिक डर और नैतिक आग्रह।
70	उपमान	संवाद के बजाय आरोप और निंदा की प्रस्तुति।

निष्कर्ष

इन आयतों में वैज्ञानिक, तर्कसंगत और न्यायिक दृष्टिकोण की कमी है। इन आयतों में अधिकांशतः नैतिक और धार्मिक आग्रह हैं, जो बिना तर्कसंगत या प्रमाणित आधार के पेश किए गए हैं। इससे न केवल तर्कसंगतता का उल्लंघन होता है, बल्कि यह मानवता और न्याय के सिद्धांतों के विपरीत है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 71

आयत का अनुवादः
"लूत ने कहा अगर तुमको (ऐसा ही) करना है तो ये मेरी क़ौम की बेटियाँ मौजूद हैं (71)
(इनसे निकाह कर लो) ऐ रसूल तुम्हारी जान की कसम ये लोग (क़ौम लूत) अपनी मस्ती में मदहोश हो रहे थे (72)"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
लूत ने अपनी क़ौम को अपनी बेटियों से विवाह करने का प्रस्ताव दिया। यह एक नैतिक विकल्प था, जो उन्होंने अपने समुदाय के लिए प्रस्तुत किया।

हेतु (Reasoning):
यह समाधान प्रतीत होता है, लेकिन नैतिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से यह समाधान अपर्याप्त है। केवल बेटियों से विवाह की पेशकश से समस्या का समाधान नहीं होता है, बल्कि यह महिलाओं की स्वायत्तता और

अधिकारों के उल्लंघन की ओर इंगीत करता है। यह तर्कसंगत समाधान के बजाय, केवल समाज की नैतिकता को ध्यान में रखते हुए एक रक्षात्मक कदम था।

उदाहरण (Example):
भारतीय समाज में, विवाह का आदर्श एक शुद्ध और व्यक्तिगत अधिकार है। बेटियों को एक आपातकालीन समाधान के रूप में पेश करना महिलाओं के अधिकारों का उल्लंघन है। यह समाधान न्याय और समानता के सिद्धांतों के खिलाफ है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक नैतिक प्रस्ताव देती है, लेकिन इसे तर्कसंगत रूप से समर्थन नहीं किया जा सकता। यह किसी समाज में महिलाओं के अधिकारों को पूरी तरह से अनदेखा करती है।

आयत 72

आयत का अनुवाद:
"(लूत की सुनते काहे को) ग़रज़ सूरज निकलते निकलते उनको (बड़े ज़ोरो की) चिघाड़ न ले डाला।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि सूरज निकलते ही लोगों पर चिघाड़ (आतंकी हमला) हो गया।

हेतु (Reasoning):
प्राकृतिक घटनाओं और घटनाओं के परिणामों को इस तरह से जोड़ना तर्कसंगत नहीं है। चिघाड़ का आना सूरज के निकलने के साथ कोई अविरत रूप से जुड़ी घटना नहीं है। यह विचार एक अंधविश्वास और बिना वैज्ञानिक आधार के प्रमाणित किया जाता है।

उदाहरण (Example):
वेदांत और सांक्य दर्शन में, हर घटना के लिए एक कारण और परिणाम का सिद्धांत होता है। इस तरह की घटनाओं को बिना कारण या तर्क के जोड़ना, अंधविश्वास को बढ़ावा देने जैसा है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्कसंगत कारण और परिणाम की अनुपस्थिति को दिखाती है, और इस प्रकार इसे व्यावहारिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अप्रत्याशित और अनुचित माना जा सकता है।

आयत 73

आयत का अनुवाद:
"(फिर हमने उसी बस्ती को उलट कर उसके ऊपर के तबक़े को नीचे का तबक़ा बना दिया और उसके ऊपर उन पर खरन्जे के पत्थर बरसा दिए इसमें शक नहीं कि इसमें (असली बात के) ताड़ जाने वालों के लिए (कुदरते ख़ुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
आयत में कहा गया है कि बस्ती को पलट दिया गया और उस पर पत्थर बरसाए गए। यह घटना एक प्रकार के कुदरती आदेश के रूप में प्रस्तुत की जाती है।

हेतु (Reasoning):
प्राकृतिक घटनाओं को इस प्रकार से आदेशित करना तर्क और वैज्ञानिक समझ के विपरीत है। न्याय दर्शन के अनुसार, प्रत्येक घटना का एक कारण होता है, लेकिन इसे अलौकिक या भगवान के आदेश के रूप में प्रस्तुत करना वास्तविकता से दूर है।

उदाहरण (Example):
भारत में, प्राकृतिक आपदाओं का अध्ययन तर्कसंगत दृष्टिकोण से किया जाता है, और उनका कोई कारण और प्रभाव होता है। केवल अलौकिक बलों द्वारा घटनाओं को नियंत्रित करने का विचार, तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्कसंगत कारण और प्रभाव के सिद्धांत के खिलाफ जाती है और प्राकृतिक घटनाओं के लिए अलौकिक हस्तक्षेप को बढ़ावा देती है।

आयत 74

आयत का अनुवाद:
"और वह उलटी हुयी बस्ती हमेशा (की आमदरफ्त)।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि बस्ती हमेशा के लिए उलट दी गई।

हेतु (Reasoning):
इस कथन में वास्तविकता के बजाय एक रूपक का प्रयोग किया गया है। यह अलौकिक और अदृश्य शक्ति के प्रभाव को दर्शाता है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, ऐसी घटनाओं का तार्किक और वैज्ञानिक व्याख्या होनी चाहिए।

उदाहरण (Example):
भारतीय दर्शन में, बुरी घटनाओं या समस्याओं के कारणों का विश्लेषण तर्क और धर्म के दृष्टिकोण से किया जाता है। लेकिन यहाँ पर केवल अदृश्य शक्तियों को जिम्मेदार ठहराना तर्कसंगत नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत उपमान के रूप में प्रस्तुत की जाती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत समर्थन नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
71	हेतु	महिलाओं के अधिकारों का उल्लंघन और अपर्याप्त समाधान।
72	व्याप्ति	सूरज के निकलने से चिघाड़ के जुड़ने का कोई तर्कसंगत आधार

		नहीं।
73	प्रमेय	प्राकृतिक घटनाओं को अलौकिक रूप से जोड़ना।
74	उपमान	अलौकिक शक्तियों का आधार बनाने से तर्कसंगत दृष्टिकोण का अभाव।

निष्कर्ष

इन आयतों में प्रमुख रूप से अंधविश्वास, अलौकिक हस्तक्षेप, और अपर्याप्त समाधान पर जोर दिया गया है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, यह आयतें तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं हैं, और इन्हें मानवता के सर्वोत्तम हित में आलोचना किया जा सकता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 75

आयत का अनुवादः
"और वह उलटी हुयी बस्ती हमेशा (की आमदरफ्त)।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि एक उलटी हुई बस्ती हमेशा के लिए बनी रहती है। यह एक स्थायी और परिवर्तनशील स्थिति को व्यक्त करता है।

हेतु (Reasoning):
प्राकृतिक घटनाओं और बदलावों को इस तरह से "उलटी हुई बस्ती" के रूप में स्थायी बनाना तर्कसंगत नहीं है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि समाज और सभ्यता की स्थितियों में निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का स्थायित्व उसके कारणों से जुड़ा होता है, जो यहां नहीं दिखाया गया है।

उदाहरण (Example):
सांस्कृतिक और सामाजिक बदलावों का उदाहरण लेकर यह सिद्ध किया जा सकता है कि कोई भी बस्ती या समाज स्थायी नहीं रहता, बल्कि समय के साथ उसका विकास या पतन होता है। भारतीय समाज में समय-समय पर विभिन्न परिवर्तन और पुनर्निर्माण होते रहते हैं।

निगमन (Conclusion):
यह आयत स्थायित्व के विचार को तर्कसंगत रूप से नहीं दर्शाती, और यह किसी स्थायी स्थिति की कल्पना करती है जो प्राकृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से असंभव है।

आयत 76

आयत का अनुवाद:
"के रास्ते पर है (76)"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
आयत कहती है कि उलटी हुई बस्ती का रास्ता हमेशा मौजूद है।

हेतु (Reasoning):
यह विचार कि कोई बस्ती का रास्ता हमेशा मौजूद है, बिना किसी कारण और स्पष्ट संदर्भ के जोड़ता है। कोई भी जगह या रास्ता समय और परिप्रेक्ष्य के साथ बदल सकता है। एक स्थिर और अपरिवर्तनीय रास्ते का होना व्यावहारिक दृष्टिकोण से असंभव है।

उदाहरण (Example):
भारत में, समय-समय पर विभिन्न मार्गों का निर्माण और उन्नयन होता है। किसी एक मार्ग का स्थायी होना तर्कसंगत नहीं है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत वास्तविकता से दूर है, क्योंकि किसी स्थान का स्थायित्व समय के साथ बदलता है। यह "व्याप्ति" के सिद्धांत के खिलाफ है, जो हर घटना के साथ एक कारण और परिणाम का संबंध स्थापित करता है।

आयत 77

आयत का अनुवाद:
"इसमें तो शक हीं नहीं कि इसमें ईमानदारों के वास्ते (कुदरते ख़ुदा की) बहुत बड़ी निशानी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह दावा करती है कि इसमें ईमानदारों के लिए एक बहुत बड़ी निशानी है, जो कुदरते ख़ुदा (ईश्वर की शक्ति) को दर्शाती है।

हेतु (Reasoning):
इस आयत में ईश्वर की शक्ति को प्रमाणित करने के रूप में एक "निशानी" प्रस्तुत की जा रही है, लेकिन इस निशानी को तार्किक रूप से प्रमाणित नहीं किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का प्रमाण प्रमाणिक स्रोतों से होना चाहिए, और यहां केवल एक धार्मिक विश्वास की बात की जा रही है।

उदाहरण (Example):
वेदांत और न्याय दर्शन में सिद्धांतों और प्रमाणों का आधार स्पष्ट होता है। कोई भी निशानी या प्रमाण बिना तार्किक प्रमाण के नहीं माना जा सकता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमाण के सिद्धांत को छोड़कर केवल विश्वास पर आधारित है, जो तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य है।

आयत 78

आयत का अनुवाद:
"और ऐका के रहने वाले (क़ौमे शोएब की तरह बड़े सरकश थे) (78)"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि "ऐका के रहने वाले" बहुत ही सरकश (अज्ञानी और नाफरमान) थे, जैसे कि क़ौमे शोएब।

हेतु (Reasoning):
यह एक सामान्य कथन है जो पूरी क़ौम के बारे में है, लेकिन इसके लिए कोई विशिष्ट कारण या तर्क नहीं दिया गया। किसी क़ौम या समूह को केवल उनके व्यवहार के आधार पर दोषी ठहराना निष्कलंक और अवैज्ञानिक है। न्याय दर्शन में किसी भी समूह या व्यक्ति का मूल्यांकन उनके कर्मों और कारणों पर आधारित होना चाहिए, न कि सामान्यीकरण के आधार पर।

उदाहरण (Example):
भारतीय न्याय में, किसी व्यक्ति या क़ौम को दोषी ठहराने से पहले उनके कार्यों और उनके कारणों की जांच की जाती है, न कि सिर्फ उनके रूप या समूह के आधार पर।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक पक्षपाती दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है, जो किसी समुदाय या समूह को केवल उनके नाम और आचरण से दोषी मानती है, जो न्याय और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 79

आयत का अनुवादः
"तो उन से भी हमने (नाफरमानी का) बदला लिया और ये दो बस्तियाँ (क़ौमे लूत व शोएब की) एक खुली हुयी शह राह पर (अभी तक मौजूद) हैं (79)"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत बताती है कि क़ौमे लूत और शोएब से बदला लिया गया और उनकी बस्तियाँ एक सार्वजनिक मार्ग पर मौजूद हैं।

हेतु (Reasoning):
यह दावा किया जा रहा है कि इन क़ौमों से बदला लिया गया, लेकिन यह घटनाएं और उनके परिणाम बिना वैज्ञानिक आधार के प्रस्तुत किए जा रहे हैं। यह अवैज्ञानिक है क्योंकि किसी भी समाज का विकास या पतन निश्चित कारणों पर निर्भर करता है, जो यहां उल्लिखित नहीं हैं।

उदाहरण (Example):
सामाजिक और ऐतिहासिक बदलावों को समाजशास्त्र में विश्लेषित किया जाता है, जहां इतिहास और तर्कसंगत कारणों से ही किसी समाज की स्थिति बदलती है। यह अवधारणा केवल सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्क और प्रमाण के सिद्धांतों के खिलाफ है और केवल विश्वास पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के अनुसार अस्वीकार्य है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
75	प्रमेय	स्थायित्व का तर्क और प्रमाण का अभाव।
76	व्याप्ति	स्थायित्व और बदलाव के सिद्धांत के खिलाफ।
77	प्रमाण	बिना तर्क और प्रमाण के निशानी का दावा।
78	प्रमेय	सामान्यीकरण और बिना कारण के आरोप।
79	प्रमेय	वैज्ञानिक और ऐतिहासिक कारणों का अभाव।

निष्कर्ष

इन आयतों में प्राकृतिक और सामाजिक घटनाओं के लिए अलौकिक और धार्मिक व्याख्याओं का उपयोग किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ हैं। यह आयतें तर्कसंगत कारणों और प्रमाणों के अभाव में हैं, और इन्हें केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित माना जा सकता है, जो सार्वभौमिक तर्क और न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 80

आयत का अनुवाद:
"और इसी तरह हिज्र के रहने वालों (क़ौम सालेह ने भी) पैग़म्बरों को झुठलाया।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत क़ौम सालेह के बारे में बताती है, जिन्होंने पैग़म्बरों को झुठलाया।

हेतु (Reasoning):
यह आयत केवल एक बयान करती है कि क़ौम सालेह ने पैग़म्बरों को झुठलाया, लेकिन यह नहीं बताती कि वे क्यों ऐसा कर रहे थे। न्याय दर्शन में किसी भी कथन को सत्य मानने से पहले, उसके कारणों और प्रमाणों को स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए। केवल किसी क़ौम के कार्यों को गलत ठहराना बिना उनके कारणों के समझे एक पक्षपाती दृष्टिकोण होगा।

उदाहरण (Example):
किसी समाज के नकारात्मक व्यवहार को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कारणों को जानना जरूरी होता है, न कि केवल धार्मिक दृष्टिकोण से उसे दोषी ठहराना।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल एक तात्कालिक आरोप प्रस्तुत करती है, बिना यह बताए कि क्यों क़ौम सालेह ने ऐसा किया। यह न्याय दर्शन में उचित नहीं माना जाएगा, क्योंकि इसके पीछे किसी स्पष्ट कारण का अभाव है।

आयत 81

आयत का अनुवाद:
"और (बावजूद कि) हमने उन्हें अपनी निशानियाँ दी उस पर भी वह लोग उनसे रद गिरदानी करते रहे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि क़ौम सालेह को ईश्वर ने अपनी निशानियाँ दीं, लेकिन उन्होंने उन निशानियों को नकारा।

हेतु (Reasoning):
यह आयत मानती है कि क़ौम सालेह को कुछ निशानियाँ दी गईं, लेकिन यह नहीं बताती कि ये निशानियाँ कैसे प्रमाणित थीं। न्याय दर्शन के अनुसार, यदि किसी घटना या चमत्कारी घटना का दावा किया जा रहा है, तो उसे प्रत्यक्ष प्रमाणों से प्रमाणित किया जाना चाहिए, जो यहां अनुपस्थित है। यदि निशानियाँ वास्तविक होतीं, तो उन्हें सार्वभौमिक प्रमाणों द्वारा साबित किया जाना चाहिए।

उदाहरण (Example):
वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी भी चमत्कारी घटना का वास्तविकता के रूप में परीक्षण किया जाता है। अगर कोई घटना बिना वैज्ञानिक प्रमाण के दावा की जाती है, तो उसे शंका की दृष्टि से देखा जाएगा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है, बिना किसी प्रमाणिक स्रोत या तर्क के, और इसलिए इसे न्याय दर्शन के अनुसार अस्वीकार्य माना जाएगा।

आयत 82

आयत का अनुवाद:
"और बहुत दिल जोई से पहाड़ों को तराश कर घर बनाते रहे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि क़ौम सालेह ने पहाड़ों को तराश कर घर बनाए।

हेतु (Reasoning):
यह कथन केवल एक क्रिया का वर्णन है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक कारण नहीं बताया गया है। किसी भी क्रिया को समझने के लिए इसके कारण और प्रभाव को देखा जाता है। उदाहरण के लिए, पहाड़ों को तराशने का कार्य प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से संबंधित होता है, और यह मात्र एक धार्मिक क्रिया नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी कार्य को वास्तविकता के संदर्भ में समझा जाना चाहिए।

उदाहरण (Example):
मानवता में निर्माण कार्य के लिए भौतिक विज्ञान और इंजीनियरिंग के सिद्धांतों का पालन किया जाता है, न कि केवल धार्मिक दृष्टिकोण के आधार पर।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक भौतिक कार्य का वर्णन करती है, लेकिन इसमें इसका वास्तविक संदर्भ या वैज्ञानिक कारण नहीं बताया गया है। इस प्रकार, यह आयत केवल धार्मिक और ऐतिहासिक संदर्भ में प्रस्तुत की गई है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

आयत 83

आयत का अनुवाद:
"आख़िर उनके सुबह होते होते एक बड़ी (जोरों की) चिंघाड़ ने ले डाला।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि क़ौम सालेह को एक चिंघाड़ (विनाशकारी ध्वनि) ने नष्ट कर दिया।

हेतु (Reasoning):
यह आयत एक चमत्कारी घटना का वर्णन करती है, जो बिना किसी प्राकृतिक या वैज्ञानिक कारण के प्रस्तुत की गई है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का कारण तर्कसंगत रूप से स्थापित किया जाना चाहिए, जो इस आयत में अनुपस्थित है। केवल एक ध्वनि को दोषी ठहराना और इसे विनाश का कारण मानना तर्कसंगत नहीं है।

उदाहरण (Example):
किसी प्राकृतिक आपदा जैसे भूकंप, तूफान, या सुनामी के कारणों को वैज्ञानिक रूप से समझा जाता है, न कि केवल ध्वनि को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना तर्क और प्रमाण के एक चमत्कारी घटना का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 84

आयत का अनुवाद:
"फिर जो कुछ वह अपनी हिफाज़त की तदबीर किया करते थे (अज़ाब ख़ुदा से बचाने में) कि कुछ भी काम न आयीं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि क़ौम सालेह ने अपनी सुरक्षा के उपाय किए, लेकिन वे सभी निष्फल साबित हुए।

हेतु (Reasoning):
यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से सुरक्षा के उपायों के प्रभाव को नकारती है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी उपाय की सफलता या विफलता को इसके कारण और परिणामों के आधार पर समझा

जाना चाहिए। यह आयत केवल एक विश्वास पर आधारित है, बिना किसी तार्किक या वैज्ञानिक विश्लेषण के।

उदाहरण (Example):
सुरक्षा उपायों की सफलता या विफलता को विज्ञान और तर्क के आधार पर देखा जाता है, जैसे कि प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए आधुनिक विज्ञान द्वारा विकसित उपाय।

निगमन (Conclusion):
यह आयत तर्क और कारण के सिद्धांतों के खिलाफ है, क्योंकि इसे केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

आयत 85

आयत का अनुवाद:
"और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के दरम्यिान में है हिकमत व मसलहत से पैदा किया है और क़यामत यक़ीनन ज़रुर आने वाली है तो तुम (ऐ रसूल) उन काफिरों से शाइस्ता उनवान (अच्छे बरताव) के साथ दर गुज़र करो।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि ईश्वर ने सब कुछ हिकमत और मसलहत से बनाया है, और क़यामत आनी है, इसलिए मुसलमानों को काफिरों के प्रति शिष्टता और धैर्य दिखाना चाहिए।

हेतु (Reasoning):
यह आयत क़यामत के बारे में एक धार्मिक विश्वास प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें इसका कोई प्रमाण या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का दावा करते समय उसके कारण और प्रमाणों को स्पष्ट करना चाहिए।

उदाहरण (Example):
क़यामत के बारे में विभिन्न धार्मिक मत हैं, लेकिन विज्ञान में कोई प्रमाण नहीं है जो इसे सत्य सिद्ध करता हो।

निगमन (Conclusion):
यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, बिना किसी तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार के। इसे न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार एक विश्वास पर आधारित समझा जाएगा, जो सार्वभौमिक तर्क के खिलाफ है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
80	**हेतु**	**कारणों और तर्क का अभाव**
81	**प्रमाण**	**बिना प्रमाण के चमत्कारी घटनाएँ**
82	**प्रमेय**	**भौतिक कार्यों के पीछे कारण का अभाव**
83	**प्रमेय**	**बिना वैज्ञानिक कारण के चमत्कारी घटना**
84	**प्रमेय**	**बिना तर्क के सुरक्षा उपायों का नकारा जाना**
85	**हेतु**	**विश्वास पर आधारित और बिना प्रमाण के क़यामत का दावा**

निष्कर्ष

इन आयतों में घटनाओं और धार्मिक विश्वासों का वर्णन किया गया है, लेकिन इनमें से कोई भी तर्कसंगत या वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना या विश्वास का मूल्यांकन उसके कारणों और प्रमाणों के आधार पर किया जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 86

आयत का अनुवाद:
"इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा पैदा करने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि ईश्वर बड़ा पैदा करने वाला है, जो स्पष्ट रूप से एक धार्मिक विश्वास है।

हेतु (Reasoning):
यह आयत केवल एक विश्वास पर आधारित है, बिना किसी भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण के। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे को सत्य मानने से पहले, उसके आधार और प्रमाणों का होना आवश्यक है। "बड़ा पैदा करने वाला" एक दर्शन है, लेकिन इसे वास्तविकता के रूप में सिद्ध नहीं किया जा सकता। यह केवल विश्वास के आधार पर व्यक्त किया गया है।

उदाहरण (Example):
वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, जीवन की उत्पत्ति और विकास को जैविक और प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से समझा जाता है। किसी धार्मिक विश्वास को स्वीकार करने से पहले, उसके बारे में तर्कसंगत व्याख्याओं की आवश्यकता होती है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसके वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण का अभाव है, जो इसे न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से निराधार बनाता है।

आयत 87

आयत का अनुवाद:
"और हमने तुमको सबअे मसानी (सूरे हम्द) और कुरान अज़ीम अता किया है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि ईश्वर ने अपने पैगंबर को 'सबअे मसानी' और 'कुरान अज़ीम' दिया है।

हेतु (Reasoning):
यह आयत कुरान की महत्ता को स्पष्ट करती है, लेकिन इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण या आधार नहीं प्रस्तुत करती। न्याय दर्शन में, किसी भी धार्मिक ग्रंथ या विचार को सत्य मानने से पहले यह आवश्यक है कि इसके भीतर के तथ्यों और विचारों का प्रमाणित आधार हो। केवल किसी पुस्तक को अज़ीम या महान कहना, जब तक वह प्रमाणित न हो, न्यायसंगत नहीं होगा।

उदाहरण (Example):
जैसे किसी वैज्ञानिक सिद्धांत को केवल उसके नाम से महान नहीं माना जाता, बल्कि उसके प्रमाण और व्याख्याओं के आधार पर स्वीकारा जाता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल एक धार्मिक दावा करती है कि कुरान महान है, लेकिन इसके वैज्ञानिक और तार्किक प्रमाण का अभाव है, और यह न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

आयत 88

आयत का अनुवाद:
"और हमने जो उन कुफ्फारों में से कुछ लोगों को (दुनिया की) माल व दौलत से निहाल कर दिया है तुम उसकी तरफ हरगिज़ नज़र भी न उठाना और न उनकी (बेदीनी) पर कुछ अफसोस करना और इमानदारों से (अगरचे ग़रीब हो) झुककर मिला करो और कहा दो कि मैं तो (अज़ाबे ख़ुदा से) सरीही तौर से डराने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि पैगंबर को उन काफिरों की संपत्ति और जीवन के लिए कोई खेद या आकर्षण नहीं दिखाना चाहिए और केवल इमानदारों से ही संपर्क रखना चाहिए।

हेतु (Reasoning):
यह आयत एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जिसमें काफिरों से दूरी बनाए रखने और इमानदारों के साथ संबंध रखने का आदेश है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था में रिश्तों और व्यवहारों को समझने के लिए तर्क और कारणों का होना आवश्यक है। सिर्फ धार्मिक आदेशों को पालन करना बिना तर्क के समाज में वास्तविक सुधार लाने में सहायक नहीं हो सकता।

उदाहरण (Example):
समाज में सभी वर्गों से समरसता और संवाद रखने के बजाय, किसी एक वर्ग से विशेष संबंध रखने का दृष्टिकोण समाज में सामंजस्य और शांति को नहीं बढ़ावा देता। इसके बजाय, तर्कसंगत बातचीत और समझदारी के माध्यम से समाज को बेहतर बनाया जा सकता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से एक विशेष वर्ग के साथ संबंधों को महत्व देती है, लेकिन यह न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें समाज की व्यापक समझ और सामूहिक संवाद का अभाव है।

आयत 89

आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) उन कुफ्फारों पर इस तरह अज़ाब नाज़िल करेगें जिस तरह हमने उन लोगों पर नाज़िल किया जिन्होंने क़ुरान को बाँट कर टुकड़े टुकड़े कर डाला।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि काफिरों पर वही अज़ाब नाजिल होगा जो उन लोगों पर आया जिन्होंने कुरान को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

हेतु (Reasoning):
यह आयत काफिरों के लिए एक सजा की भविष्यवाणी करती है, लेकिन यह सजा का कारण स्पष्ट नहीं करती। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दंड को तर्कसंगत आधार पर समझाया जाना चाहिए। सजा और

अपराध के बीच एक स्पष्ट कारणात्मक संबंध होना चाहिए। केवल ऐतिहासिक घटनाओं से तुलना करके यह सिद्ध नहीं किया जा सकता कि यह सजा काफिरों के लिए उचित होगी।

उदाहरण (Example):
किसी अपराधी को सजा देने के लिए उस अपराध का प्रमाण और तर्क होना चाहिए, न कि केवल अतीत की घटनाओं से तुलना करके सजा दी जाए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत कुरान की आस्था के खिलाफ की गई कार्यों के आधार पर भविष्य में सजा का दावा करती है, लेकिन इसमें कोई तर्क या कारण नहीं बताया गया है, जो इसे न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से सही नहीं ठहराता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
86	प्रमाण	धार्मिक विश्वास बिना प्रमाण के
87	प्रमाण	बिना प्रमाण के कुरान को 'अज़ीम' कहना
88	हेतु	बिना तर्क के सामाजिक संबंधों का निर्धारण
89	प्रमेय	सजा और अपराध के कारण का अभाव

निष्कर्ष

इन आयतों में धार्मिक विश्वासों और आदेशों का वर्णन किया गया है, लेकिन इनमें कोई तर्कसंगत या प्रमाणित आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी धार्मिक या सामाजिक आदेश का पालन करने से पहले उसके कारण और प्रभाव का स्पष्ट रूप से स्थापित किया जाना चाहिए, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत ९०

आयत का अनुवाद:
"जिन्होंने कुरान को बाँट कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों की आलोचना करती है जिन्होंने कुरान को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

हेतु (Reasoning):
यह आयत कुरान की पवित्रता और एकता को बनाए रखने का संकेत देती है। हालांकि, न्याय दर्शन के अनुसार, यह कथन बिना प्रमाण या व्याख्या के किसी विशेष घटना या आस्थाओं को दोषपूर्ण मानता है। कुरान के विभाजन के संदर्भ में, यह यह स्पष्ट नहीं करता कि इसका क्या तात्पर्य है और किस संदर्भ में यह विभाजन हुआ है।

उदाहरण (Example):
किसी साहित्यिक या धार्मिक ग्रंथ को तोड़ने और अलग-अलग व्याख्याओं में पेश करना कोई नई या असामान्य घटना नहीं है। उदाहरण के तौर पर, अन्य धार्मिक ग्रंथों का भी कई तरह से विभाजन और व्याख्या की जाती है। यह भी हो सकता है कि अलग-अलग भाषाओं और क्षेत्रों में कुरान के विभिन्न संस्करण होने के कारण इसे "विभाजन" के रूप में देखा जाता हो।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना पर्याप्त व्याख्या के कुरान के विभाजन को निंदनीय मानती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत आधार या प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया जाता, जिससे यह न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से अपूर्ण है।

आयत 91

आयत का अनुवाद:
"(बाज़ को माना बाज को नहीं) तो ऐ रसूल तुम्हारे ही परवरदिगार की (अपनी) क़सम कि हम उनसे जो कुछ ये (दुनिया में) किया करते थे (बहुत सख़्ती से) ज़रुर बाज़ पुर्स (पुछताछ) करेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि कुरान में वर्णित लोग और उनके कार्यों के लिए ईश्वर ज़रूर पूछताछ करेगा।

हेतु (Reasoning):
यह आयत एक भविष्यवाणी का दावा करती है, जिसमें उन लोगों की पुछताछ की जाएगी जिन्होंने कुरान या धार्मिक आदेशों का उल्लंघन किया। यह दावा सिर्फ एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसमें कोई प्रमाण या व्याख्या नहीं दी गई है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भविष्यवाणी को सत्य मानने से पहले उसके प्रमाणों का होना आवश्यक होता है।

उदाहरण (Example):
किसी अदालत में आरोपियों की सुनवाई होती है, और सजा देने से पहले उनके अपराध का प्रमाण और न्यायसंगत आधार प्रस्तुत किया जाता है। बिना प्रमाण और साक्ष्य के किसी को सजा देना उचित नहीं होता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक धार्मिक भविष्यवाणी करती है, लेकिन इसके प्रमाण या व्याख्या का अभाव है, जो इसे न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से अपूर्ण बनाता है।

आयत 92

आयत का अनुवाद:
"पस जिसका तुम्हें हुक्म दिया गया है उसे वाजेए करके सुना दो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत पैगंबर को आदेश देती है कि वे ईश्वर के आदेशों को स्पष्ट रूप से लोगों को सुनाएं।

हेतु (Reasoning):
यह आयत स्पष्ट रूप से धार्मिक आदेश की पक्षधर है, जिसमें पैगंबर को अपने संदेश को स्पष्ट और सटीक रूप से प्रसारित करने का निर्देश दिया गया है। यह आदेश एक धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी आदेश का पालन करते समय तर्क और कारण का होना आवश्यक है, ताकि लोग इसे समझ सकें और सही प्रकार से पालन कर सकें।

उदाहरण (Example):
जब किसी नीति या नियम को लागू किया जाता है, तो उसे स्पष्ट रूप से लोगों के सामने रखा जाता है, ताकि सभी लोग उसे समझ सकें और पालन करें। इसी तरह, पैगंबर को भी संदेश को स्पष्ट रूप से लोगों तक पहुँचाना चाहिए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक स्पष्ट धार्मिक आदेश देती है, लेकिन इसमें किसी प्रकार का तर्क या व्याख्या नहीं दी गई है, जिससे यह न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से केवल एक आदेश ही रह जाता है, बिना किसी व्यावहारिक या तर्कसंगत आधार के।

आयत 93

आयत का अनुवाद:
"और मुशरेकीन की तरफ से मुँह फेर लो।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत पैगंबर को आदेश देती है कि वे मुशरेकीन (बहुत देवताओं के पूजक) से मुँह फेर लें।

हेतु (Reasoning):
यह आदेश मुशरेकीन के साथ संबंधों को नकारने का है, जो एक धार्मिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, समाज में एकजुटता और समरसता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। मुशरेकीन से मुँह फेरने का आदेश बिना तर्क के दिया गया है, जो समाज में विभाजन और असहमति को बढ़ा सकता है।

उदाहरण (Example):
समाज में जब विभिन्न विचारधाराएँ होती हैं, तो उनकी समझ और संवाद करना ज़रूरी होता है। यह केवल विरोध या असहमति को बढ़ावा देने से समस्याओं का समाधान नहीं होता।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक धार्मिक आदेश देती है, लेकिन यह समाज में आपसी समझ और संवाद के महत्व को नजरअंदाज करती है, जो न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से निराधार हो सकता है।

आयत 94

आयत का अनुवाद:
"जो लोग तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के बारे में कहती है जो पैगंबर की हंसी उड़ाते हैं।

हेतु (Reasoning):
यह आयत आलोचना और मजाक उड़ाने के बारे में है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी धार्मिक संदेश को आलोचना से परे एक तार्किक तरीके से समझने की आवश्यकता है। मजाक उड़ाने या आलोचना करने को केवल नकारात्मक रूप से देखना बिना तर्क के कोई समाधान नहीं होता।

उदाहरण (Example):
किसी वैज्ञानिक या दार्शनिक विचारधारा का मजाक उड़ाना, जबकि उसके समर्थन में कोई वैज्ञानिक प्रमाण न हो, उसे तर्कसंगत तरीके से सही नहीं ठहराया जा सकता। आलोचना और विचारों का आदान-प्रदान एक स्वस्थ और तार्किक समाज का हिस्सा होना चाहिए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत आलोचना और मजाक उड़ाने को नकारात्मक रूप से देखती है, लेकिन इसका कोई तार्किक आधार या समाधान नहीं प्रस्तुत करती है, जिससे यह न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से अपूर्ण हो जाती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
90	**प्रमेय**	**कुरान के विभाजन का दोष बिना तर्क के आरोपित किया गया है।**
91	**प्रमाण**	**भविष्यवाणी का दावा बिना प्रमाण के।**
92	**प्रमाण**	**आदेश का पालन बिना तर्क के किया जाता है।**
93	**हेतु**	**समाज में एकजुटता के महत्व को नकारता है।**
94	**प्रमेय**	**आलोचना को नकारात्मक रूप से लिया गया है।**

निष्कर्ष

इन आयतों में धार्मिक आदेश और भविष्यवाणियों का वर्णन किया गया है, लेकिन इनमें कोई तर्कसंगत आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, आदेश और दावे को सही ठहराने के लिए प्रमाण और तर्क की आवश्यकता होती है, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर विश्लेषण

आयत 95

आयत का अनुवाद:
"जो लोग तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के बारे में कहती है जो पैगंबर की हंसी उड़ाते हैं।

हेतु (Reasoning):
यह आयत आलोचना और मजाक उड़ाने के बारे में है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी धार्मिक संदेश को आलोचना से परे एक तार्किक तरीके से समझने की आवश्यकता है। मजाक उड़ाने या आलोचना करने को केवल नकारात्मक रूप से देखना बिना तर्क के कोई समाधान नहीं होता।

उदाहरण (Example):
किसी वैज्ञानिक या दार्शनिक विचारधारा का मजाक उड़ाना, जबकि उसके समर्थन में कोई वैज्ञानिक प्रमाण न हो, उसे तर्कसंगत तरीके से सही नहीं ठहराया जा सकता। आलोचना और विचारों का आदान-प्रदान एक स्वस्थ और तार्किक समाज का हिस्सा होना चाहिए।

निगमन (Conclusion):
यह आयत आलोचना और मजाक उड़ाने को नकारात्मक रूप से देखती है, लेकिन इसका कोई तार्किक आधार या समाधान नहीं प्रस्तुत करती है, जिससे यह न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से अपूर्ण हो जाती है।

आयत 96

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा के साथ दूसरे परवरदिगार को (शरीक) ठहराते हैं हम तुम्हारी तरफ से उनके लिए काफी हैं तो अनक़रीब ही उन्हें मालूम हो जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत उन लोगों के बारे में है जो अल्लाह के साथ अन्य देवताओं को साझीदार मानते हैं।

हेतु (Reasoning):
यह आयत यह कहती है कि अल्लाह के साथ साझीदार ठहराने वाले लोग जल्द ही इसका परिणाम जान लेंगे। लेकिन न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, यह तर्क बिना पर्याप्त प्रमाण के एक दावे के रूप में प्रस्तुत किया

गया है। जब तक कोई प्रमाण या तर्क न हो, इस तरह के दावे पर विश्वास करना न्यायिक रूप से स्वीकार्य नहीं होता।

उदाहरण (Example):
यदि किसी व्यक्ति का दावा किया जाए कि किसी अन्य शक्ति या तत्व के साथ किसी की तुलना नहीं की जा सकती, तो उसके पास इसका प्रमाण होना चाहिए। बिना प्रमाण के किसी के बारे में ऐसे दावे करना तर्कसंगत नहीं होगा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत बिना प्रमाण और तर्क के एक भविष्यवाणी करती है कि साझीदार मानने वाले लोग अपने कार्यों के परिणाम को जल्द ही जान लेंगे। यह दावों को प्रमाणित करने के लिए किसी ठोस तर्क की अनुपस्थिति के कारण न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से अपूर्ण है।

आयत 97

आयत का अनुवाद:
"कि तुम जो इन (कुफ्फारों मुनाफिक़ीन) की बातों से दिल तंग होते हो उसको हम ज़रुर जानते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि अल्लाह को पैगंबर की चिंता और दुःख का ज्ञान है।

हेतु (Reasoning):
यह आयत यह बताती है कि अल्लाह पैगंबर के दुःख और चिंताओं को जानता है। यह धार्मिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य हो सकता है, लेकिन न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से, यह एक दावा है जो बिना किसी प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है। किसी भी व्यक्तिगत दुःख या भावना को बिना प्रत्यक्ष प्रमाण के जानने का दावा केवल धार्मिक विश्वास के रूप में लिया जा सकता है।

उदाहरण (Example):
किसी व्यक्ति का यह कहना कि "मैं आपके दुख को समझता हूँ" तब ही सच्चा माना जाएगा जब वह व्यक्ति

वास्तव में उस दुख का अनुभव करता हो या इसके प्रमाण मौजूद हों। बिना प्रमाण के यह एक दावा ही रहता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक दावा करती है कि अल्लाह पैगंबर की चिंताओं को जानता है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है। इस कारण से यह न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से अपूर्ण और बिना तर्क के है।

आयत 98

आयत का अनुवाद:
"तो तुम अपने परवरदिगार की हम्दो सना से उसकी तस्बीह करो और (उसकी बारगाह में) सजदा करने वालों में हो जाओ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reasoning)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत पैगंबर को अल्लाह की तस्बीह (प्रशंसा) करने और सजदा करने का आदेश देती है।

हेतु (Reasoning):
यह आयत धार्मिक कर्तव्यों को निभाने का आदेश देती है, लेकिन यह बिना किसी तर्क या कारण के एक आदेश है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी आदेश का पालन करते समय यह समझना महत्वपूर्ण होता है कि उस आदेश का क्या तात्पर्य है और वह क्यों महत्वपूर्ण है। बिना तर्क के आदेश देना केवल आदेश देने की प्रक्रिया तक सीमित हो सकता है।

उदाहरण (Example):
जब किसी कार्य को करने के लिए आदेश दिया जाता है, तो इसे स्पष्ट और तर्कसंगत तरीके से समझना जरूरी है। यदि किसी को बिना समझाए केवल आदेश दिया जाए, तो यह उसे सिर्फ पालन करने के लिए प्रेरित करेगा, जबकि उसे कार्य का महत्व समझने में कोई मदद नहीं मिलेगी।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक धार्मिक आदेश देती है, लेकिन यह बिना तर्क और व्याख्या के दिया गया है, जिससे यह न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से अपूर्ण हो सकती है।

आयत 99

आयत का अनुवाद:
"और जब तक तुम्हारे पास मौत आए अपने परवरदिगार की इबादत में लगे रहो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि मृत्यु तक अल्लाह की इबादत (आराधना) करते रहना चाहिए।

हेतु (Reasoning):
यह आयत एक अंतिम और स्थायी आदेश देती है कि व्यक्ति को अपनी मृत्यु तक इबादत में लगे रहना चाहिए। यह धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, इस प्रकार का आदेश बिना किसी व्याख्या या तर्क के नहीं दिया गया है। ऐसे आदेश को समझने के लिए इसका तात्पर्य और उद्देश्य स्पष्ट किया जाना चाहिए।

उदाहरण (Example):
एक कार्य को पूरी जिंदगी करने के लिए प्रेरित करना तब ही समझदारी से किया जा सकता है जब उस कार्य के उद्देश्य और उसके लाभ को समझाया जाए। बिना उद्देश्य स्पष्ट किए कोई व्यक्ति इसे केवल आदेश के रूप में ही देखेगा।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक धार्मिक आदेश देती है, लेकिन इसमें इसका तात्पर्य या उद्देश्य स्पष्ट नहीं किया गया है, जिससे यह न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से अपूर्ण हो सकती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	तत्व (Nyaya Element)	मुख्य आलोचना
95	प्रमेय	आलोचना को नकारात्मक रूप से लिया गया है, बिना व्याख्या के।
96	हेतु	बिना प्रमाण के एक भविष्यवाणी की जाती है।
97	प्रमाण	अल्लाह के ज्ञान का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।
98	हेतु	आदेश दिया गया है लेकिन बिना तर्क और व्याख्या के।
99	प्रमाण	आदेश दिया गया है लेकिन उद्देश्य और तात्पर्य स्पष्ट नहीं किया गया है।

निष्कर्ष

इन आयतों में धार्मिक आदेश और भविष्यवाणियों का वर्णन किया गया है, लेकिन इनमें कोई तर्कसंगत आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, आदेश और दावे को सही ठहराने के लिए प्रमाण और तर्क की आवश्यकता होती है, जो इन आयतों में अनुपस्थित है।